श्रीदुर्गा सप्तशती

सरल हिन्दी कविता

DEVI MANDIR

shreemaa.org

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

श्रीदुर्गा सप्तशती

सरल हिन्दी कविता

माँ दुर्गा की पवित्र कहानी |
धर्म अर्थ काम मोक्ष दायिनी |
भक्ति युक्त करें पाठ तुम्हारी |
बसो माँ प्यारी दिल में सदा हमारी ||
दुर्गा माता की जय !

परम पाविनी श्री सनातनी मैया की जय !
परम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी की जय !
चण्डी माँ की जय! जय! जय!

Durga Saptashati, Saral Hindi Kavita
Copyright ©2014 by Devi Mandir
All rights reeserved.

Devi Mandir
5950 Highway 128
Napa, CA 94558 USA
707-966-2802
www.shreemaa.org

॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ॥

विषय-सूची

विषय		प्रष्ठ-संख्या
१.	प्राक्कथन	(i)-(iv)
२.	देवि कवच	१
३.	अर्गला स्तोत्रं	११
४.	कीलक	१६
५.	रात्री सूक्तम्	२०
६.	अध्याय १	२३
७.	अध्याय २	३९
८.	अध्याय ३	५२
९.	अध्याय ४	६४
१०.	अध्याय ५	७३
११.	अध्याय ६	९१
१२.	अध्याय ७	९७
१३.	अध्याय ८	१०४
१४.	अध्याय ९	११९
१५.	अध्याय १०	१२८
१६.	अध्याय ११	१३७
१७.	अध्याय १२	१४८
१८.	अध्याय १३	१५७

१९. ऋगवेदोक्तम देवी सूक्तम १६५
२०. क्षमा प्रार्थना १६८
२१. सूची एक १७०
२२. सूची दो १७१

|| ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ||

प्राक्कथन

दुर्गा सप्तशती का आरम्भ राजा सुरथ और वैश्य समाधि की कथा से होता है | राजा सुरथ, जो कभी पूरे ग्रह के राजा थे, ने अपना राज्य दुश्मनों और अनैतिक मंत्रियों के हाथों खो दिया | वैश्य समाधि को, उनकी संपत्ति के लालच में, उन्ही के परिवार वालों ने घर से बाहर निकाल दिया | दोनों अपने घरों को छोडकर जंगल में जा पहुँचे जहाँ उन्हें मेधास मुनि का शांतिमय आश्रम मिला | वहाँ के वातावरण की शांति उनके अशांत मन से विपरीत थी |

वे ऋषि मेधा के पास गए और अभिवादन करने के पश्चात उनसे कहा, “यद्यपि हम दोनों ज्ञानी हैं, पर हमारा मन शांत नहीं है क्योंकि हम अपने मन को काबू रखने में असमर्थ हैं| कृपया हमारी सहायता कीजिए |”

क्या हम सब भी अपने जीवन में विभिन्न स्तरों पर उन्हीं समस्याओं से नहीं घिरे हैं जो राजा सुरथ और वैश्य ने अनुभव की? प्रायः हम अपने भूतकाल में घटी घटनाओं, या कैसे हम भविष्य में अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करेंगे, की चिंता करते हैं| यद्यपि हमें ज्ञात है कि ये विचार हमारी

सहायता नहीं करेंगे, फिर भी हम उनके सामने विवश हैं | वे हमें बार-बार सताते हैं और हम उनके सामने अशांत और असहाय हैं |

राजा सुरथ के प्रश्न के उत्तर में ऋषि मेधा कहते हैं कि आप में कुछ बुद्धि और ज्ञान है, पर इसी तरह पूरी प्रकृति में भी है | वह बताते हैं कि सभी जीवित प्राणी अपनी इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करते हैं पर उनका तरीका अलग-अलग होता है | जैसे कुछ प्राणी दिन में देख पाते हैं और कुछ रात को | यह सब स्थूल रूप का ज्ञान है |

फिर ऋषिवर उन्हें पक्षियों का उदाहरण दिखाते हैं जो स्वयं भूखे रह कर भी अपने बच्चों को दाना खिला रहे थे | वे समझाते हैं कि सब प्राणी महामाया देवी द्वारा ऐसे करने को विवश हैं | वे देवी ही हैं जो हम सब को भी मोह के भंवर में रखती हैं |

मेधा मुनि कहते हैं कि शांति पाने के लिये इस भंवर से निकलना होगा | यह तुम केवल देवी माँ की कृपा से ही कर सकते हो |

जब राजा सुरथ ने मेधा मुनि से देवी माँ के बारे में बताने का आग्रह किया, तब मेधा मुनि उन्हें चण्डी की कथा सुनाते हैं | यह ही दुर्गा सप्तशती के तीन खण्ड हैं |

दुर्गा सप्तशती की महानता इसमें है कि देवी माँ की अलग-अलग असुरों पर विजय की हर कथा के पीछे हम सब के लिये एक शिक्षा छिपी है | यह हमें सिखाती है कैसे हम अपने अंदर छिपे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें और अपने को ईश्वर-प्रेम में समर्पित कर दें | परम शांति की प्राप्ति की राह में आने वाली बाधाएँ और उन पर कैसे विजय पानी है, एक उत्कृष्ट और गुप्त विधि में इस ग्रन्थ में सन्निहित है | जब हम इसे जान जाते हैं, थोडा सा भी, तो हम अपने को बहुत मधुरता और प्रेम से परिपूर्ण पाते हैं| हर अध्याय देवी माँ का अपनी रचनाओं के प्रति स्नेह और हमारी अनुराग की कथा है |

कलियुग के लिए ही देवी माँ ने स्वयं मार्कण्डेय ऋषि से उनके बारे में ग्रंथ लिखने को कहा था | मार्कण्डेय पुराण से लिए ७०० श्लोकों की दुर्गा सप्तशती, माँ की महिमा का गुणगान करते हुए, इस कलियुग में मानव जाति को ईश्वर

तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है | यह मार्ग ईश्वर से स्नेह और समर्पण का मार्ग है |

इस ग्रंथ से अधिकतम लाभ के लिए, हमें प्रथम इन श्लोकों का अर्थ समझना होगा | हमें इनका गूढ़ अर्थ, और ये कैसे हमारी ज़िन्दगी से संबधित हैं, भी समझना होगा | अन्त में, हमें इन सीखों को अपनी ज़िन्दगी में अपनाकर, जीवन को उत्तम बनाना होगा |

हम आशा करते हैं कि माँ की अनुकम्पा से सरल हिन्दी में लिखित यह छोटी सी पुस्तिका हम सब को दुर्गा सप्तशती की कथा को समझने में सहायता करेगी | हमने हर अध्याय में कुछ श्लोक दिये हैं जो उस प्रसंग का गूढ़ अर्थ और हमारी साधना के लिए उनका निहितार्थ बताते हैं | हमने प्रत्येक अध्याय की भूमिका भी लिखी है जो उस अध्याय के मुख्य पात्रों का गूढ़ अर्थ बताती है | इस पुस्तक के अंतिम पन्नों में हमने दो सूचियाँ दी हैं जिनमे देव और असुरों के नाम और भावार्थ समझाये गये हैं |

प्रत्येक अध्याय अलग अलंकार में लिखा है जिसे कविता की तरह पढ़ सकते हैं या आसान धुनों में बाधंकर खुशी से

उस माँ की स्तुति कर सकते हैं, जो संसार की हर रचना और हमारे दिलों में विराजमान हैं |

श्री सनातनी माँ और स्वामी सत्यानान्दजी महाराज के कमल चरणों में प्रणाम करते हुए, मैं यह पुस्तिका और अपने आप को माँ के श्री चरणों में समर्पित करती हूँ | जय माँ भवानी !

देवी मंदिर
१/१०/२०१३
www.shreemaa.org

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

देवी कवच

देवी कवच में ब्रह्मदेव हम सब को एक अद्भुत रहस्य समझाते हैं | यह कवच क्या है? यह माँ की पवित्र शक्ति की व्याख्या है | इस कवच को धारण करने पर हमारे अपने अंदर माँ की पवित्र शक्तियाँ जागृत होती हैं | कवच का पाठ करते समय शरीर के अनुकूल अंगों पर ध्यान दें | यह अनुभूति जागृत करें कि माँ की विशेष शक्ति उस अंग में जाग रही है | यह विश्वास रखिये कि माँ की शक्तियाँ हमें सदा सुरक्षित रखेंगी, हमें सही रास्ता दिखाऐंगी और हमें अपने मंज़िल तक पहुंचाऐंगी|

माँ को जानने का एक सुन्दर रास्ता इस कवच में समझाया गया है | यह नव दुर्गा का मार्ग है | सबसे पहली दुर्गा माँ शैलपुत्री हैं जो हमारे अंदर प्रेरणा की देवी के रूप में हैं | दूसरी माँ ब्रह्मचारिणी (पवित्र अध्ययन की देवी) हैं और तीसरी दुर्गा हैं चन्द्रघण्टा (अभ्यास का आनन्द देने वालीं) | माँ कूष्माण्डा (निर्मल तपस्या देवी) चौथी दुर्गा हैं | अगली चार देवियाँ हैं: माँ स्कन्दमाता (दैवत्व पालन करने वाली देवी), माँ कात्यायनी (देवी जो सदा पवित्र हैं), कालरात्रि देवी (जो हमारी अहंकार का नाश करती हैं), और महागौरी

(रोशनी से उज्ज्वलित देवी) | नौवीं दुर्गा माँ सिद्धिदात्री हैं, जो हमें पूर्णता प्रदान करके अपने श्री चरणों में सदा के लिये ले लेती हैं |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

देवी कवच

मार्कण्डेय मुनि ने प्रश्न किया ब्रह्मा से ।
क्या साधन है जिससे सबकी रक्षा होवे ॥
अब तक गोपनीय प्रकट ना किया हो ।
कृपा करके मुझे आप उसका अभी ज्ञान दो ॥ (१)

ब्रह्माजी बोले सुनो मार्कण्डेय तपो धन ।
सर्व प्राणियों के हित का गुप्त साधन ॥
जो परम गोपनीय अति पावन भी है ।
ऐसा साधन तो एक देवी कवच ही है ॥ (२)

प्रथम शैलपुत्री हैं, दूसरी ब्रह्मचारिणी ।
तीसरीं चन्द्रघण्टा, चौथी कूष्माण्डा जननी । (३)

पाँचवीं हैं स्कन्दमाता, छठा रूप कात्यायनी ।
सातवीं कालरात्रि हैं, आठवीं महागौरी ॥ (४)

नवीं दुर्गा का नाम है, देवी सिद्धिदात्री ।
ये नाम किये प्रकाश, सर्वज्ञ ब्रह्मा ने ही ॥ (५)

अग्नि में मानव जलें, रण में शत्रु घेरें ।
भय विपत्ति आयें, शरण माँ की लेलें ॥ (६)

अशुभ कोई ना घटे, युद्ध में संकट ना मिले |
माँ के आशीर्वाद से, शोक भय ना आए || (७)

भक्ति से सदा माँ का स्मरण करो |
ऐश्वर्य का शुभ लाभ माँ से पाओ |

इससे हो जायें सब अमंगल दूर |
और माँ करें तुम्हारी रक्षा ज़रूर || (८)

प्रेत पर चामुण्डा, महिष पर वाराही |
गज वाहन ऐन्द्री, गरुड़ पर वैष्णवी | (९)

माहेश्वरी वृषभ पर, कौमारी ने मयूर लिया |
कमलासन में लक्ष्मी, हाथ में पद्म लिया || (१०)

वृषभ पर ईश्वरी, श्वेत रूप धारिणी |
हंस पर अलंकार, सहित माँ ब्राह्मी || (११)

इस प्रकार माताएँ, योगशक्ति से शोभित |
अनेक और देवियाँ भी, रत्नों से शोभित | (१२)

भक्तों की रक्षा के लिये देवियाँ क्रोधित |
हाथ शंङ्ख, चक्र, गदा, मूसल शोभित || (१३)

खेटक तोमर परशु कुन्त त्रिशूल धारिणी |
उत्तम शर्ङ्गधनुष भी रखतीं माँ जननी | (१४)

अस्त्र धारण लक्ष्य, भक्तों को अभय दान |
दैत्यों का नाश, देवों का सदा कल्याण || (१५)

नमस्कार तुम्हे माँ, रूद्र स्वरूपिणी |
तुम्ही उत्साहवाली, महान भय नाशिनी || (१६)

शत्रु का भय बढ़ाके, मैया मुझे रक्षो |
पूर्व दिशा ऐन्द्री, अग्निकोणमें अग्नि रक्षो | (१७)

दक्षिण दिशा वाराही, नैर्ऋत्य खड्गधारिणी |
पश्चिम दिशा वारुणी, वायव्य मृगवाहिनी | (१८)

उत्तर कौमारी, ईशान शूलधारिणी |
ऊपर में ब्रह्माणी, नीचे रक्षो वैष्णवी || (२०)

दसों दिशा शव-वाहिनी, चण्डिका रक्षो |
आगे रक्षो जया देवी, पीछे विजया रक्षो || (२०)

वामभाग अजिता, दक्षिण में अपराजिता |
शिखा रक्षो उद्योतिनी, मस्तक में रहो उमा || (२१)

भौंहों में यशस्विनी, भौंहों के मध्य त्रिनेत्रा |
ललाट में मालाधरी, नथुनों में यमघण्टा || (२२)

कपाल में कालिका, नेत्रों के मध्य शङ्खिनी |
कान द्वारवासिनी, उनके मूल शांकरी || (२३)

नासिका सुगन्धा, ऊपरी ओठ चर्चिका |
नीचे ओठ अमृतकला, जिह्वा सरस्वती || (२४)

दाँतों में कौमारी, कण्ठ में चण्डिका |
गलेकी घाँट चित्रघण्टा, तालू महामाया || (२५)

वाणी सर्वमंगला, ठोडी रक्षो कामाक्षी |
ग्रीवा भद्रकाली, प्रष्ठवंश धनुर्धरी || (२६)

बाहरी-कण्ठा नीलग्रीवा, नली नलकूबरी |
कंधे खड्गिनी, भुजा वज्रधारिणी || (२७)

हाथों में दण्डिनी, नखों में शूलेश्वरी |
अंगुली में अम्बिका, पेट में कुलेश्वरी || (२८)

स्तनों रक्षो महादेवी, मन शोकविनाशिनी |
हृदय रक्षो ललिता, उदर शूलधारिणी || (२९)

नाभि में कामिनी, गुह्यभाग जुह्येश्वरी |
कामिका रक्षो लिंग, गुदा महिषवाहिनी || (३०)

घुटने विंध्यवासिनी, कटि भगवती |
पिण्डलियाँ महाबला, सर्व कामना दायिनी || (३१)

नारसिंही घुटिकायें, चरण पृष्ट तैजसी |
श्री देवी पैर अंगुली, तालू तलवासिनी || (३२)

नखों को रक्षो माँ दंष्ट्रा कराली |
केशों को रक्षो माँ ऊर्ध्वकेशिनी |
रोमावालियों छिद्रों को माँ कौबेरी |
और त्वचा को सदा रक्षो वागीश्वरी || (३३)

रक्त मज्जा वसा मांस हड्डी व मेदकी |
इन सब को रक्षो तुम ही माँ पार्वती ||
पित्त मुकुटेश्वरी, आँतों कालरात्रि |
कफ चूडामणि, कमल केश पद्मावती || (३४)

नख के तेज की रक्षा, करो ज्वालामुखी |
शरीर की संधियाँ रक्षो, अभेध्या देवी || (३५)

वीर रक्षो ब्रह्मानी, छाया छत्रेश्वरी |
मन बुद्धि अहंकार, रक्षो धर्मधारिणी || (३६)

रक्षो प्राण आपान आदि वायु वज्रहस्ता |
मेरे प्राण को तुम रक्षो कल्याणशोभना || (३७)

रक्षो रस रूप गन्ध शब्द स्पर्श योगिनी |
सत्त्व रजो तमो गुण रक्षो नारायणी || (३८)

धर्म रक्षो वैष्णवी, आयु रक्षो वाराही |
यश कीर्ति माँ लक्ष्मी, धन विद्या चक्रिणी || (३९)

पशु रक्षो चण्डिके, गोत्र को इन्द्राणी |
पुत्रों को महालक्ष्मी, पत्नी को माँ भैरवी || (४०)

पथ रक्षो सुपथा, मार्ग माँ क्षेमकरी |
सर्व जय की प्राप्ति, राज-द्वार महालक्ष्मी || (४१)

रक्षा हीन जो स्थान हो, या ना हो कवच में भी |
तुम्ही रक्षो जयन्ती, पापनाशिनी उसे भी || (४२)

हे मनुष्य कवच बिना, न रखो एक पग भी |
देवी कवच के संग ही, हर यात्रा सफल होगी || (४३)

हे मानव कवच संग, तू जहाँ भी जायेगा |
वहाँ तुझे अवश्य, धन लाभ मिलेगा ||
तेरी कामनाओं की माँ, करेंगी पूर्ति |
माँ कृपा से मन चाही, वस्तु मिलेगी || (४४)

कवच रक्षित पुरुष का, भय शून्य होगा |
विजय युद्ध में तीनों लोकों में पूजन होगा || (४५)

देवी का कवच ये, ना प्राप्त है देवों को भी |
तीन संध्या को भक्ति, से पाठ जिसने की || (४६)

उसे देवी कला मिले, विजय तीनों लोकों में |
लंबी आयु उसे मिले, मुक्ति अल्पमृत्यु से || (४७)

देवी का कवच सब, प्रकार के रोग हरे |
स्थावर जङ्गम कृत्रिम, विष को नष्ट करे || (४८)

जिसने ह्रदय में, कवच धारण किया |
उसको सुरक्षा माँ, ने अपार दिया |
नष्ट हो जायें यन्त्र, मंत्र अभिचारी |
दुष्ट पृथ्वी जल या आकाश चारी || (४९)

सहजा कुल देवता, कण्ठमाला शाकिनी |
अंतरिक्ष में विचरने वाली डाकिनी || (५०)

गृह भूत पिशाच यक्ष गन्धर्व राक्षस |
भैरव बेताल कूष्माण्ड और ब्रह्मराक्षस | (५१)

जो जो अनिष्टकारक, देव उसको देखें |
कवच के भय से, वे सब दूर भागें || (५२)

कवचधारी को मिले, राजा से सम्मान |
बढे उसका तेज कीर्ति, यश और मान || (५३)

जो भी कवच के बाद, चण्डि पाठ करें |
वो ही चण्डि का, सच्चा फल लाभ जानें |

जब तक वन, पर्वत और पृथ्वी रहेगी |
कवच धारी के संतान व कुल रहेगी || (५४)

देह के अन्त में, मिले परम पद स्थान |
जो देवों को भी मिलना, नहीं है आसान || (५५)

माँ की कृपा से वो धारण करे सुन्दर रूप |
माँ उसे दें कल्याणमय शिव स्वरूप || (५६)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अर्गला स्तोत्रम्

देवी कवच का उच्चारण करते हुए हमारी माता की कृपा द्वारा रक्षा होती है | अब हम वो द्वार खोलना चाहते हैं जिसके पीछे जगन्माता की परम रहस्य छिपी है | यही हम अर्गला और कीलकम् स्तोत्र से करते हैं | अर्गला स्तोत्रम् में, हम बार-बार माँ दुर्गा से एक सुन्दर और महत्वपूर्ण प्रार्थना करते हैं |

“माँ हमें अपना रूप दो, अपनी विजय दो, हमें कल्याण दो और सभी प्रकार के विरोध समाप्त करो |”

“हमें अपना रूप दो” का मतलब है दर्शन प्रदान करो, माँ का पूर्ण-रूप हमारे सामने आए | हमारे सभी विचारों और कार्यों में माँ ही प्रकट हों | “हमें विजय दो” का अर्थ है कि हम अपने अहम पर विजय प्राप्त कर सकें, हमारी विजय हमारे स्वार्थ पर हो | “विरोध समाप्त करो” का मतलब है कि हमें शान्तिमय जीवन और विश्व प्रदान करो | हमारी चेतना शान्ति से परिपूर्ण हो, तथा हमारा हर अनुभव शान्ति प्रसारित करे |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अर्गला स्तोत्रम्

माँ जयन्ती मंगला, काली कपालिनी |
दुर्गा क्षमा शिवा स्वाहा, धात्री भद्रकाली |
स्वाहा भी तुम्ही तो माँ, स्वधा भी तुम्ही |
बार बार नमस्कारें, तुम को ही माँ प्यारी || (१)

जय करें तुम्हारी माँ, चामुण्डा देवी |
सब के प्राणों की पीड़ा, हरने वाली ||
नमस्कारें तुम्हे माँ, कालरात्री देवी |
सब में तुम्ही तो माँ, व्याप्त रहने वाली || (२)

मधु-कैटभ असुरों, को मारने वाली |
और ब्रहमाजी को भी वर, देने वाली ||
उसी प्रकार हम पर भी माँ, कृपा दान करो |
रूप जय यश दो, मन से सब शत्रु हरो || (३)

नमस्कारें तुझे माँ, महिषासुर नाशिनी |
तू ही तो है माँ भक्तों, को सुख प्रदायिनी ||
आज खड़े द्वार तेरे, माँगे यह वर भवानी |
रूप जय यश दो, मारो शत्रु जननी || (४)

चण्ड-मुण्ड दैत्यों की, माँ तुम विनाशिनी |
रक्तबीज असुर का, वध करनेवाली ||
सर्वदा हम पर माँ तुम, कृपा दान करो |
रूप जय यश दो, मन के शत्रु नाश करो || (५)

शुम्भ-निशुम्भ धूम्रलोचन, को तुम ने मारे |
रूप जय यश दो, नशो शत्रु हमारे || (६)

सबके द्वारा वन्दित, युगल चरणोंवाली |
तुम्ही तो माँ हो सम्पूर्ण, सौभाग्य देने वाली |
प्यारी सुनलो विनती, हमारी यह दिलसे |
रूप जय यश दो, शत्रु नाश करो मेरे || (७)

अचिन्त्य तेरा रूप व चरित्र शत्रु नाशिनी |
रूप जय यश दो, नाश करो शत्रु सभी || (८)

हे पापनाशिनी चण्डिके, जो जन भक्ति से भरे |
अपना मस्तक सदा तेरे, चरणों में झुकाये रखें |
उन पर माँ तुम सर्वदा, अपनी कृपा दान करो |
रूप जय यश दो, शत्रुओं का नाश करो || (९)

हे रोगनाशिनी चण्डिके, जो स्तुति करें भक्ति से |
मिले रूप जय यश उन्हें, शत्रु नाश हों उनके || (१०)

जो भक्तिपूर्वक पूजें, चण्डिका देवी तुम्हे |
उन्हें रूप जय यश मिले, शत्रु नाश हों उनके || (११)

मुझे सौभाग्य आरोग्य दो, परम सुख माँ मुझे दो |
रूप दो, जय दो, यश दो, शत्रुओं का नाश करो || (१२)

नाश हों वो जो करें द्वेष, मेरे बल की वृद्धि हो |
रूप दो, जय दो, यश दो, माँ सब शत्रु नाश करो || (१३)

कल्याण मेरा माँ तुम करो, उत्तम संपत्ति दो |
रूप जय यश दो, मन के शत्रु नाश करो || (१४)

सुर और असुर माथा, झुकायें माँ तेरे चरण |
रूप जय यश दो, नाश करो सब शत्रु गण || (१५)

तुम बनातीं भक्त को, विद्वान यशस्वी धनी |
रूप जय यश दो, भगाओ शत्रु जननी || (१६)

शरण में आए तेरे, प्रचण्ड दैत्य-दर्प नाशिनी |
रूप जय यश दो, भगाओ शत्रु माँ जननी || (१७)

चतुर्मुख ब्रह्माजी ने, की प्रशंसा माँ तेरी |
माँ तू ही है चार भुजा, धारिणी परमेश्वरी ||
आज खड़े द्वार तेरे मांगें, यह वर भवानी |
रूप दो, जय दो, यश दो, शत्रु मारो जननी || (१८)

नित्य तेरे गुण गायें, विष्णु देव भक्ति भरे|
रूप जय यश दो, नाश करो शत्रु मरे || (१९)

पार्वती-वर महादेव करें, तारीफ़ परमेश्वरी |
रूप दो जय दो यश दो, भगाओ शत्रु जननी || (२०)

शचीपति इन्द्र तेरी, परमेश्वरी पूजा करें |
रूप जय यश दो, नाश करो शत्रु मेरे || (२१)

प्रचण्ड दैत्यों का तुमने, किया घमण्ड चूर |
रूप जय यश दो, भगाओ शत्रुओं को दूर || (२२)

भक्तों को असीम आनन्द, दायिनी माँ अम्बिके |
रूप जय यश दो, नाश करो शत्रु मेरे || (२३)

मनोहर पत्नी दो जो चले, मेरे मन के अनुसार |
उत्तम कुल से आई हो, करे वो जग-सागर पार ||
(२४)

जो इस स्तोत्र का पाठ करे, फिर करे सप्तशती पाठ |
उसको होता सब संपत्ति, जप का श्रेष्ठ फल भी प्राप्त ||
(२५)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

कीलक स्तोत्रम्

भगवान शिव पूर्ण ज्ञान के निर्मल स्वरूप हैं | उन्होंने चण्डी पाठ पर कीलक रखा है जिससे चण्डी का रहस्य गुप्त रहे | यह रहस्य क्या है? यह माँ का सत्य स्वरूप समझना और अनुभव करना है |

हम कीलक स्तोत्र में सीखते हैं कि निरन्तर प्रयत्न के बिना हम कुछ भी नहीं पा सकते (श्लोक ४) | माँ का रहस्य जानने के लिये तो हमें दृढ़ निश्चय और अटल विशवास के साथ साधना करनी होगी | श्लोक ८ में हम सीखते हैं कि महादेव ने कीलक बनाया ही ऐसा है कि जितना हम प्रयास करेंगे उसके अनुसार ही हमें कर्म फल प्राप्त होगा |

फिर यह प्रश्न उठता है कि माँ को पाने के लिये हम किस प्रकार का प्रयास करें और कैसे करें? इस के उत्तर का संकेत हम श्लोक १३ में पाते हैं जहाँ बताया गया है कि जब हम अभ्यास करें हम उच्च स्वर में करें | इससे हमारे अन्तःकरण का पूरा ज़ोर होगा और हम पूर्णतया सफल होंगे |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

कीलकम्

कहते हैं मार्कण्डेय, मुनि तपो धन ।
धीरे-धीरे शिष्यों से, ये मधुर वचन ॥
ज्ञान उनका शरीर, तीन वेद उनके नयन ।
उत्तम प्राप्ति के दाता, प्रणाम शिव भगवन ॥ (१)

सप्तशती स्तोत्र का, कीलक मन्त्र पूरा जानो ।
जपो निरन्तर इसको, उत्तम कल्याण पाओ ॥ (२)

जो सप्तशती स्तोत्र से ही, देवी की स्तुति करें ।
उन्हें वस्तुओं से, परम वैराग्य सिद्धि मिले ॥ (३)

ना है कोई मन्त्र-औषध, या साधन जिससे ।
मिले कोई सिद्धि बिना, निरन्तर प्रयत्न के ॥ (४)

महादेव ने ये बात, सबको समझा दिया ।
लोगों के मन की श्ङ्का, यह कह दूर किया ॥
सप्तशती है सर्वश्रेष्ठ, साधन कल्यानमय ।
इसके पाठ से ही बनें, हम आनन्दमय ॥ (५)

सप्तशती के पाठ से, प्राप्त पुण्य की ।
किसी भी तरह, समाप्ति ही नहीं ।

अत: स्वयं महादेव ने, इस पाठ पर ही |
कीलक लगा के, इसे गुप्त कर दी || (६)

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी और अष्टमी को |
हे साधक एकाग्रत बनाके अपने मन को |
माँ पर ध्यान करके, सर्वस्व समर्पित करो |
इस प्रकार माँ कृपा से, पूर्ण आनन्द पाओ || (७)

महादेव ने कीलक, बनाया है ऐसा |
कि मिले हर एक को, फल कर्म जैसा ||
विधि और समर्पण से, यह स्तुति जो करे |
माँ की प्रसन्नता का, आशीर्वाद वो पाये || (८)

कीलक संग जो दुर्गा सप्तशती पाठ करे |
वो सिद्ध बने देवी पार्षद और गन्धर्व बने || (९)

संसार में जहाँ भी जाये, ना लगे कहीं भय |
अमृत्यु ना हो और उसे, मोक्ष मिले निश्चय || (१०)

करो पहले कीलक, जानके और समझ के |
फिर करो सप्तशती, पाठ पवित्र बुद्धि से ||
जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता |
इस समझ से ही ज्ञानियों, का पाठ होता || (११)

नारी में जो सौभाग्य, आदि सुन्दर स्वरूप |
ये सब देवी की ही, कृपा का हैं रूप ||
इसलिए अभी से इस, कल्याणमय स्तोत्र |
का तुम भी करो निरन्तर जप दोस्त || (१२)

मन्द स्वर पाठ से होती, स्वल्प फल की प्राप्ति |
उच्चस्वर पाठ से मिलती, पूर्ण फल की सिद्धि |
अत: करो मानव इस सुन्दर पाठ का आरम्भ |
उच्चस्वर से होगा पूर्ण सिद्धि का प्रारम्भ || (१३)

माँ देतीं आरोग्य सौभाग्य व संपत्ति |
क्यों ना करेंगे लोग जगदम्बा की स्तुति ||
सब शत्रु का नाश भी, है माँ का ही आशीर्वाद |
मोक्ष की परम सिद्धि, भी माँ का ही है प्रसाद || (१४)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

रात्री सूक्तम्

चण्डी पाठ करते समय हम प्रारम्भ में रात्री सूक्तम् का पाठ करते हैं और अन्त में देवी सूक्तम् का पाठ करते हैं | इन दोनों के बीच में हम चण्डी के १३ अध्याय का पाठ करते हैं जो हमें सिखाते हैं कि माया भरी रात्री से दैविक पूर्णत्व तक कैसे पहुँचा जाये |

रात्री सूक्तम् में हम देखते हैं कि देवी माँ ही रात्री देवी के रूप में माया जाल फैलाती हैं जिसके कारण हम सारी सृष्टि को अलग-अलग भिन्न रूप में देखते हैं | जब माँ उषा देवी के रूप में प्रकाश लाती हैं, तब अंधकार को समाप्त होना ही पड़ता है | इस सूक्तम् से हम जानते हैं कि वास्तव में यही प्रकाश, यही सत्य ज्ञान की ज्योति है जो सारी सृष्टि तलाश कर रही है |

रात्री सूक्तम् में हम माँ की स्तुति करते हैं ताकि माँ के प्रकाश से हमारे जीवन में भौर से प्रातः आ पाये | हम अपने स्वार्थ को त्याग देते हैं और पुनः दैविक बोध प्राप्त करते हैं | हम माया जाल से दूर और अज्ञानता से परे हो जाते हैं |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

रात्रि सूक्तम्

रात्री देवी करें उत्पन्न विभिन्न जीव जन्तु ।
वही देवी इन्द्रियों से करें प्रकाश सब वस्तु ॥ (१)

देवी हैं अमर और विश्व में सर्व व्यापी ।
भुवन में भी वो व गगन में भी स्थित देवी ॥
घोर अज्ञान के अन्धकार में जीव निराश ।
ज्योति से होता उस अज्ञानता का नाश ॥ (२)

रात्री स्वयम करें प्रकट अपनी बहिन उषा ।
वह ब्रह्मविद्यामयी नष्ट करतीं सब अँधेरा ॥ (३)

अब बन चुकीं हैं रात्री देवी हमारी अपनी ।
देख पायें अब सब आसानी से लीला उनकी ॥
जैसे पक्षी देखें अपने वृक्ष में घोंसले से ।
हम भी देखें सब कुछ साक्षी बन के ॥ (४)

करुणामयी रात्री देवी के आधीन में ।
ग्रामवासी लोग और पशु जो चलें पैरों से ।
पक्षी जो उड़े पंखों से व पथिक जो यात्रा करें ।
सब ही करें शयन भरपूर सुख शान्ति से ॥ (५)

हमसे वासनामयी वृत्ति अलग करो |
पापमय वृत्ति को हमसे दूर हटा दो ||
अहंकार की निरन्तर पीड़ा से हमें बचाओ |
माया के समस्त बंधन से हमें छुड़ाओ ||
हमारे लिए बनो शुभ कल्याणमयी माँ |
ज्ञान राह दिखा के बनो मोक्षदायिनी माँ || (६)

अज्ञानमय काला अन्धकार का छाया |
यह अन्धेरा मेरे निकट है आ पहुँचा |
रात्री की अधिष्टात्री हे देवी उषा |
ज्ञान देकर मेरे अज्ञान को दो हटा || (७)

दूध देनेवाली गाय के समान रात्री देवी |
समीप आकर हमने तुम्हारी स्तुति की |
परम व्योमस्वरूप परमात्मा की पुत्री |
हमारी यह स्तुति हो सदा विजयी || (८)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १

इस अध्याय में हम राजा सुरथ और वैश्य समाधि से परिचित होते हैं | वे दोनों अनुभव करते हैं कि वे शांति से रहना चाहते हैं, फिर भी वे अपने मन को काबू में रखने में असमर्थ हैं और इस कारण बेचैन हैं | इस समस्या का समाधान निकालने के लिए वे मेधास मुनि से मार्ग दर्शन चाहते हैं | मेधास मुनि उन्हें देवी माँ के बारे में बताते हैं और दुर्गा सप्तशती का पहला अध्याय सुनाते हैं जो मधु-कैटभ वध कहलाता है |

राजा सुरथ “उच्च विचारों” का प्रतिनिधित्व करते हैं | यद्यपि उन के शत्रु उन के सामने अल्प हैं, परन्तु राजा की ही हार होती है | इसी प्रकार हमारे मन में उच्च विचारों के बीच यदि एक भी दुर्विचार आता है, हमारी मानसिक स्थिति डगमगा जाती है | समाधि का गूढ़ अर्थ है एक स्वतः उत्पन्न सत्य ज्ञान | मेधा मुनि का सूक्ष्म अर्थ है प्रेम से उत्पन्न बौद्ध ज्ञान |

चण्डी पाठ के प्रथम अध्याय में दो असुर मधु और कैटभ भगवान विष्णु के कर्ण मैल से उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मदेव को मारने के लिए आतुर हैं | ब्रह्माजी हमारी सृजानात्मक शक्ति हैं | मधु और कैटभ का तात्पर्य "अधिकतम" और "न्यूनतम" है |

कभी-कभी हमें ऐसा लगता है कि हमारे पास जो है वह पर्याप्त नहीं है और हम इससे ज्यादा चाहते हैं - अधिक धन, सफलता, ज़्यादा सुविधाएँ चाहते हैं | उस समय हमारे मन पर कैटभ असुर का आक्रमण हो रहा है और हमें लगता है कि हमारे पास बहुत कम (न्यूनतम) ही है | हमारा मन इस कारण अशान्त रहता है | किसी-किसी समय पर हम अनुभव करते हैं कि हमारे ऊपर बहुत ज़्यादा दायित्व है | एक तरफ़ काम का बोझ तो दूसरी तरफ़ परिवार का पालन-पोषण करना तो तीसरी ओर अपनी सेहत का ख्याल रखना | मन में शान्ति के बिना हमें मानसिक तनाव होता है | असुर मधु (अधिकतम) लगातार हम पर वार करता रहता है और हम सोचते हैं कि हमारे ऊपर बहुत भार है |

ऐसी स्थिति में हमारे मन की रचनात्मक शक्ति (ब्रह्मदेव) शान्त और साम्य्वस्था में नहीं है | वे अपना कर्तव्य पूर्ण नहीं कर पाते | इस के लिए दोनों असुरों का अन्त अनिवार्य है |

यह अध्याय बताता है कि कैसे ब्रह्म देव ने माँ दुर्गा की कृपा से श्रीहरि को जगाया और असुरों का नाश कैसे हुआ | हमें पता चलता है कि माँ की कृपा और श्री हरि की दया से ही मधु-कैटभ का नाश हो सकता है | ब्रहमाजी की स्तुति से हम सीखते हैं कि माँ को कैसे बुलाना चाहिए और अपने आप को उनका कृपा-पात्र कैसे बनाना चाहिए जिससे मन की शान्ति और सन्तुलन की प्राप्ति हो |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय १

ध्यान

भगवान विष्णु थे जब योगनिद्रा में |
मधु कैटभ दैत्य को मारने के लिए |
कमलजन्मा ब्रहमा ने पुकारा जिनको |
पूजते हम उन्ही महाकाली देवी को ||

खड्ग, चक्र, गदा, बाण और परिध |
शूल भुशुण्डि से उनके हाथ शोभित |
शड्ख और अहंकार का मस्तक भी |
अपने दस हाथों में वे धारण करतीं ||

तीन नेत्र, दस मुख और दस पैरों वाली |
महाकाली माँ को सदा नमन हमारी|

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १

मार्कण्डेय मुनि ने, दिव्य ज्ञान दिया |
बागुरीजी को चण्डी, समझाते कहा || (१)
सूर्य ज्ञान की ज्योति, सावर्णि सुत उनके |
सावर्णि सब जगत के, हर देश, वर्ण उनके ||
कैसे बने वे आठवाँ, मनु सुनो यह कथा|
उनकी उत्पत्ति की, कथा सुन लो ज़रा|| (२)
महामाया माँ ने वर, दिया सावर्णि को |
मन्वंतर का स्वामी, बना दिया उनको || (३)
स्वरोचिष मन्वंतर, में भूमंडल के|
चैत्र वंश से उत्पन्न, सुरथ एक राजा थे|| (४)
अपनी प्रजा का करते, पुत्र समान पालन|
तब बने बैरी उनके, कोला विध्वंसी गण || (५)
समझो प्यारे तुम भी, कौन सुरथ व शत्रु भी|
सुरथ अपने अंदर की, निर्मल आत्म-चिंतन ही ||
प्रजा हैं सब इन्द्रियाँ, रिश्ते नाते जीवन के|
शत्रु आत्म बैरि जो, आत्मा शान्ति बिगाड़ें ||

अति प्रबल सुरथ से, शत्रु का जब युद्ध हुआ।
बल कम होने पर भी, शत्रु ही विजित हुआ ॥ (६)
तब रण भूमि त्याग के, लौटे नगर राजा ।
पर वहाँ भी शत्रु ने, आक्रमण कर डाला ॥ (७)
हम भी जग त्याग के, आँखें बंद ध्यान करें ।
आती तब चिंतायें, ध्यान को भंग करने ॥
जब देखा राजा को, बिलकुल बलहीन ।
दुष्ट मंत्रियों ने लिया, राज कोष छीन ॥ (८)
जग का सब हार के, शिकार बहाना किये ।
घोड़े पे सवार राजा, जंगल ओर चल दिये ॥ (९)
वहाँ मेधा मुनि का, आश्रम उन्होंने देखा ।
शान्ति संग रहते, बहु जीवों को देखा ॥
वहाँ शोभा बढ़ाते, मुनि-शिष्यों को देखा ।
प्रेम बुद्धि का स्वरूप, मेधा मुनि को देखा ॥ (१०)
मुनि ने किया सत्कार, राजा उस जगह में ।
इधर-उधर घूमते, कुछ समय ठहर गये ॥ (११)
तब ममता से भरे, राजा सोच में पड़े ।
पूर्वजों की नगरी जो, पालन किया मैंने ॥ (१२)
अब न मेरी और मेरे, दुराचारी भृत्यगण ।
न जाने करते कि ना, धर्म से उसका रक्षण ॥ (१३)

और सदामद शूरवीर, प्रधान हाथी मेरा |
शत्रु हाथ में ना जाने, वह कैसे होगा || (१४)
धन भोग पाके लोग, मेरे पीछे चलते |
दूसरों के पीछे वे, आज चलते होंगे ||
उन सब ने कोष को, किया होगा खाली |
मोह में डूबे राजा, ने यह सब चिंता की || (१५,१६)
तब आश्रम के पास, एक वैश्य को देखा |
प्रेम से "भाई, कौन हो?" राजा ने पूछा || (१७)
"यहाँ आने का कारण? देखने से तो लगता |
मन में है दुःख क्या? लक्ष्य दूर है क्या?" (१८)
नमन कर नम्र भाव से, वैश्य राजा से बोला | (१९,२०)
"धनी कुल से आया मैं, वैश्य समाधि नाम का || (२१)
मेरे दुष्ट स्त्री, पुत्रों, ने आके धन-लोभ में |
अपने ही घर से निकाल, भगा दिया मुझे || (२२)
बंधुओं ने मेरा धन, लेके मुझे दूर किया |
सबसे वंचित होके दुखी, मैं यहाँ चला आया || (२३)
यहाँ आके चिंता है, मैं तो जानता नहीं |
परिवार स्वजन मेरे, हैं कुशल या नहीं? (२४)
और वे मेरे पुत्र? सदाचारी हैं वे क्या?" (२५)
वैश्य की बातें सुनके, सोचके बोले राजा | (२६)

“जिन लोभी स्त्री पुत्रों ने, घर से ही निकाला | (२७)
उनके प्रति आपका, कैसा बंधन प्रेम का?” (२८)
राजा की बात सुनके, समाधि वैश्य बोला | (२९)
“मैंने भी वही सोचा, आपने जो अब कहा || (३०)
क्या करूँ यह मन ही, निष्ठुर नहीं हो पाता |
जिन्होंने धन लोभ में, मेरा प्रेम त्यागा || (३१,३२)
अब भी उनके प्रति दिल, प्रेम से ही भरा |
लंबी साँसे उनको सोच, महामते मैं लेता || (३३)
जानके भी न जान पाऊँ, चाहके भी ना भूल पाऊँ |
मन मेरा विचिलित क्यों? निष्ठुर क्यों न हो पाऊँ?” (३४)
मार्कण्डेय जी बोले तब, मन की दशा समझने |
वैश्य व राजा मिलके, मुनिवर के पास गये|| (३५)
उन्होंने यथायोग्य, विनय से बर्ताव किया|
फिर दोनों ने ऋषि संग, वार्तालाप शुरू किया|| (३७, ३८)
राजा बोले, “हे भगवन, हमारी विनती सुनो |
कृपा करके हमारे, मन की शंका दूर करो || (३९, ४०)
मेरा चित्त अपने आधीन, नहीं और इस कारण |
कर देता है खूब दुखी, निरंतर ही मेरा मन ||
राज्य और उसके सब अंग, गये मेरे हाथों से |
पर उन के प्रति ममता, न गई इस मन से || (४१)

मुनिश्रेष्ठ जानके भी, वे अब मेरे हैं नहीं |
अज्ञानियों जैसे क्यों, उनके लिए मैं दुखी ?
इधर इस वैश्य का भी, अपनों ने अपमान किया |
इसके घरवालों ने घर, से इसे भगा दिया || (४२)
उनके प्रति जिन्होंने, किया यह बुरा बर्ताव |
क्यों है इसके दिल में, अत्यंत स्नेह का भाव ?
जान के भी मुनिवर, जान न पा रहे हैं |
अपने दुःखी मन को, मना न पा रहे हैं || (४३)
जिस में हमने दोष देखा, उसी में ममता जागा |
यह मोह क्या जो हममें, महाभाग पैदा हुआ? (४४)
हम समझदार हैं तो भी, क्यों दिखायी देती |
विवेक हीन पुरुष जैसे, मूढ़ता हम में भी ?" (४५)
सुनके राजा की बातें, यह बोले ऋषि मेधा |
इंद्रियों से विषय ज्ञान, हर जीव प्राप्त करता || (४७)
पर यह विषय ज्ञान भी, सबके लिए है भिन्न |
कुछ प्राणी रात देखें, कुछ देखें सिर्फ दिन ||
तथा कुछ जीव ऐसे, दिन-रात देखें एक समान |
मानव में बोध है तो, पर उसको ही नहीं ज्ञान || (४९)
पशु पक्षी मृग में भी, है समझ और ज्ञान भरी |
मनुष्य की समझ भी, उन मृग पक्षियों जैसी || (५०)

यह और अन्य बातें भी, हैं दोनों में सम ही |
देखो उन पक्षियों को, उनमें समझ होते भी || (५१)
वे स्वयं भूखे फिर भी, मोह-वश बच्चों के |
चोंच में बड़े चाव से, अन्न दाने डाल रहे || (५२)
मानव अपने पुत्रों से, करता अभिलाषा |
लोभ वश करता है, प्रत्युपकार की आशा ||
हे राजा देखते नहीं, चाहत में आप लोभ?
मोह के गड्ढे में ही, गिरे पड़े हैं सब लोग? (५३)
यूँ तो सब में समझ की, कमी तो वैसे नहीं |
पर संसार की स्थिति, बनाए रखने वाली ||
महामाया के प्रभाव, से सब ही जीव गण |
मोह के अँधेरे में ही, बितायें प्रत्येक क्षण ||
भगवती माँ की ही, मोह है अज्ञान शक्ति |
इस विषय में कुछ भी, आश्चर्य बात नहीं || (५४)
श्री हरि की योगनिद्रा, रूपा हैं महामाया |
उनसे ही जगत सारा, ऐसे मोहित हो रहा || (५५)
ज्ञानियों के चित्तों को, भी उन्होंने खींचा है |
बलपूर्वक उन्हें भी, मोह में ढकेला है ||
वे देवी ही इस सारी, जगत की सृष्टि करतीं |
प्रसन्न होने पर वे ही, लोगों को मुक्ति देतीं || (५६)

परा विद्या माँ ही हैं, मुक्ति दें सनातनी | (५७)
संसार-बंधन भी माँ ही, त्रिदेवों की ईश्वरी || (५८)
राजा बोले, "हे भगवन! मेरी शंका दूर करो | (५९)
महामाया देवी कौन? आप मुझको ज़रा बोलो | (६०)
उनका जन्म कैसे हुआ? उन्होंने क्या कर्म किया ?
हे ज्ञान शिरोमणि! कैसे प्रभाव है उनका ?
कैसा स्वरूप है उनका, प्रादुर्भाव कैसे हुआ ? (६१)
यह सब आपके श्री मुख से, चाहता हूँ मैं सुनना ||" (६२)
"हे राजन" बोले ऋषि, प्रेम बुद्धि ज्ञान दाता | (६३)
"नित्यस्वरूपा हैं वो, देवी जगत की माता || (६४)
जगत की हर वस्तु में हैं, वही सर्वव्यापी माँ |
जगत का हर रूप उनका, वे सर्वस्वरूपा माँ || (६४)
फिर भी समय-समय पर, वे देवी प्रकट होतीं |
उनके बारे में मुझसे, सुनिये राजा अभी ||
नित्य और अजन्मा माँ, देव कार्य सिद्ध करने | (६५)
जब प्रकट होती हैं लोग, "उत्पन्न हुईं" कहते || (६६)
प्रलयकाल में जगन्नाथ, हरि योगनिद्रा में थे |
तब उनके कर्ण मैल से, दो विकट असुर निकले || (६७)
मधु कैटभ नाम से, वे दोनों विख्यात थे |
ब्रह्माजी का वध करने, वे तैयार हो गये || (६८)

प्रभु कर्ण मैल हैं, आवरण जो हमें |
दूर रखते उनसे, जग में ढकेल देते ||
अपने अंदर की सृष्टि, शक्ति को ये मारेंगे |
जग के बंधन में हमें, सदा ही नचायेंगे ||
प्रभु नाभि कमल में, बैठे हुए ब्रह्मा ने |
देखा जब उन दोनों को, अपने ही पास आते ||
उन्होंने तब भगवान, नारायण ओर देखा |
उन कमल नयनों में, योगनिद्रा माँ को पाया ||
एकाग्रत मन किये, ब्रह्माजी ने की स्तुति |
श्री हरि की अनुपम, शक्ति योग निद्रा की || (६९)
तुम्ही माँ विश्वेश्वरी, तुम ही तो जगद्धात्री |
संसार पालिनी तुम माँ, और संहारिनी भी || (७०, ७१)
ब्रह्माजी बोले प्यारी, भगवती माँ को | (७२)
देवी तुम्हीं स्वाहा, स्वधा, वषट्कार हो || (७३)
माँ तुम स्वर स्वरुपा, जीवनदायिनी सुधा |
ॐ की तीन मात्राएँ, नित्य अर्ध मात्रा || (७४)
तुम्ही संध्या सावित्री, तुम्ही परम जननी |
धारण किया विश्व को, तुम्ही करतीं सृष्टि भी || (७५)
पालन किया कल्प अंत, में तुम्ही ने संहार भी |
प्रत्येक समय में तुम ही, विभिन्न माँ दिखतीं || (७६)

सृष्टि समय सृष्टिरूपा, पालन में स्थिति रूपा |
प्रलय काल में बनीं माँ, देवी संहारिका ||
महा विद्या महा माया, महामेधा माँ स्मृति | (७७)
महा मोहा भी माँ तुम, महा सुरी भगवती || (७८)
तुम्ही सबकी प्रकृति, तीनों गुण पैदा करतीं |
तुम भीषण काल रात्रि, महारात्रि, मोहरात्रि || (७९)
तुम ही बोधस्वरूपा, बुद्धि-श्री-ईश्वरी भी |
तुम ह्रीं लज्जा पुष्टि, तुष्टि शांति क्षमा भी | (८०)
घोर रूपा खड्ग शूल, बाण परिध धारिणी |
गदा चक्र शंख धनुष, भुशुण्डि धारिणी ||
अत्यंत सुखदायिनी, सौम्य सौम्यतर हो |
सुन्दर पदार्थ जो भी, उनसे सुन्दर माँ तुम हो || (८१)
पर और अपर में तुम, परम हो परमेश्वरी |
सत-असत रूपा वस्तु, सब की तुम ही शक्ति || (८२)
सर्व स्वरूपा ऐसे में, देखो तुम मेरी स्थिति |
आप ही हो सब तो मैं फिर, कैसे करूँ स्तुति ? (८३)
इस संसार की सृष्टी, पालन, संहार जो करते |
उन प्रभु विष्णु को ही, निद्रा युक्त किया तुमने || (८४)
हम त्रिदेवों को शरीर, तुमने ही दिलाया है |
तुम्हारी स्तुति करने की, सामर्थ्य किस में है ?

हे देवी तुम अपने ही, गुणों से स्तूयमान हो | (८५)
कृपा कर इन दैत्यों को, मोह में तुम डाल दो || (८६)
जगदीश्वर विष्णु को, माँ शीघ्र जगा दो |
इन दोनों दैत्यों को, मारने की प्रेरणा दो ||" (८७)
समझो इससे साधक, शांत मन चाहो तो|
अपने अंदर सोये प्रभु, को जगाना चाहो तो ||
ब्रह्माजी से सीखो तुम, माँ की स्तुति करना |
आगे ना बढ़ पाओगे, मातृ कृपा बिना ||
आगे राजा से बोले, मेधास मुनि योगी |
ब्रह्माजी की स्तुति सुन, प्रसन्न हुईं देवी || (८८)
तब प्रभु को जगाने, मधु-कैटभ वध करने |
तमोगुण अधिष्ठात्री, देवी योगनिद्रा ने ||
प्रभु के नेत्र और मुख, नाक व हृदय बाहु से |
निकल के निद्रा को, भंग किया एकदम से || (९०)
अव्यक्ता अजन्मा ब्रह्मा, के दृष्टि के समक्ष ही |
देवी आ खड़ी हुईं, योग निद्रा स्वरूपिणी || (९१)
योगनिद्रा से मुक्त, प्रभु जगन्नाथ उठे |
एकार्णव के जल से, शेष नाग की शय्या से ||
दो असुरों को देखा, जगत के स्वामी ने |
वे दुरात्मा तो अति, प्रबल पराक्रमी थे || (९२)

क्रोध से लाल थे नयन, उन दो दैत्यों के |
उसी क्षण वे चाहते, ब्रह्माजी को खाने || (९३)
तत्काल ही प्रभु उठे, दैत्यों के संग लड़े |
पाँच हजार वर्षों तक, बाहुयुद्ध करते रहे ||
हमारा भी हर जीवन, है सुर-असुर का ही जंग|
इसमें भी प्रभु का युद्ध, है मधु-कैटभ के संग ||
अपने ही बल के कारण, उन्मत्त हो गये वे दो |
और महामाया ने भी, मुग्ध किया दुष्टों को || (९४)
इसलिए कहने लगे, वे प्रभु श्री हरि से |
"तुष्ट तुम्हारी साहस से, तुम्हे हम वर देंगे||" (९५)
सुनके ये वचन भगवान, हँसते हुए बोले |
"तुम हो तुष्ट यदि तो, हो जाए अब तुम्हारे || (९७)
मेरे हाथों से ही वध, मांगूं मैं वर यह तुमसे |
और लेना भी क्या है, मुझे किसी और वर से||" (९८)
कहने लगे मेधास मुनि, सुनो सुरथ राजा|
आगे की सब कहानी, और क्या कैसे घटा|| (९९)
तब माया के प्रभाव से, दैत्यों ने यह देखा |
जल-ही-जल से यह पूरा, जगत भरा देखा ||
वास्तव में प्यारे यह जल, है जगत का माया रूप |
इससे हमें बचाए, प्रभु का ही सत स्वरूप ||

ऐसे धोखे में आके, वे दैत्यगण दो |
सोच के बोले प्रभु, कमल नयन को || (१००)
“हमारा तुम वध करो, ऐसे किसी स्थान में |
जहाँ पर पृथ्वी ना, डूबी हो इस जल में ||” (१०१)
मेधास मुनि बोले, आगे की कहानी | (१०२)
दैत्यों से प्रभु बोले, “होगा ऐसा ही ||”
शंख चक्र गदा धारी, ने गोद में अपने |
मस्तक उनके रखके, सर चक्र से काट डाले || (१०३)
इस प्रकार महामाया, देवी प्रकट हुईं |
ब्रह्मा ने स्तुति करी, और वे स्वयं आईं ||
देवी प्रभाव की बातें, मैं बताऊँ अभी |
ध्यान से सुनो राजा, इस चरित्र को भी || (१०४)
सरल हिन्दी में लिखी, मधु-कैटभ वध कथा |
सत्य सनातनी माँ, स्वीकारो आप कृपया ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“मधु-कैटभ-वध” नामक पहला अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय २

इस अध्याय में महिषासुर द्वारा स्वर्ग पर विजय, देवों और त्रिदेवों द्वारा अपने तेज से माँ दुर्गा का सृजन, और देवी का महिषासुर और उस की सेना से युद्ध का वर्णन है |

महिषासुर “महान अहकांर” का प्रतिनिधित्व करता है और उसके सभी यौद्धा अहंकार के समित्र हैं, जैसे चामर मन की चपलता, चिक्षुर भ्रम और उदग्र घमण्ड का स्वरूप है | देव हमारे अन्तर्मुखी मन का दिव्य स्वभाव हैं जबकि असुर हैं मन की बाहिर्मुखी प्रवृति | देव हमारे मन को परमात्मा मुखी बना कर शान्ति प्रदान करते हैं | देवों की हार जब असुरों के हाथों होती है हमारे मन का राजा अहंकार बन जाता है | हम मन की शान्ति खो देते हैं और बाहिर्मुखी प्रवृत्ति की ताडना से अत्यन्त पीड़ित हो जाते हैं | ऐसी स्थिति का समाधान कैसे हो हम इस अध्याय के पाठ से जान लेते हैं |

पुस्तक के अन्त में सूची एक है जिसमें देवों और असुरों का नाम और उनके भावार्थ दिए गए हैं |

इस अध्याय में एक सुन्दर प्रार्थना भी है जो सिखाती है कि हम कैसे देवी माँ को अपने ही अन्दर अपने दिव्य गुण और समर्पण से प्रकट कर सकते हैं | यहाँ समर्पण का उदान्त चित्रण है | प्रत्येक देव अपनी शक्ति देवी माँ को अर्पित करते हैं और स्वीकारते हैं कि माँ शक्ति, ऊर्जा और क्षमताओं का स्त्रोत हैं |

इसी तरह जब हम भी माँ को समर्पण भाव से पुकारेंगे तब माँ का हमारे अन्दर से ही प्रादुर्भाव होगा और वे स्वयं रणभूमि में प्रकट होकर असुरों का विनाश करेंगी | हम फिर केवल साक्षी बनकर उस महा युद्ध को देखेंगे |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय २

ध्यान

जिनके हाथ शोभित, जपनी परशु दण्ड से |
और गदा धनुष-बाण, वज्र, ढाल, पद्म से |
कुण्डि, खड्ग, शङ्ख, चक्र, शूल भी लिए |
शक्ति, मधु पात्र, पाश, घंटा लिए ||

उन अष्टदशभुजा देवी, महालक्ष्मी का |
उन कमल आसन पर बैठी, प्रसन्न मुखवाली का |
उन महिषासुरमर्दिनी भगवती का |
भजन, ध्यान, नमन, सदा मैं कर रहा ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय २

मेधास मुनि बोले, अब सुनो ओ राजा ।
देवी के प्रभाव की, यह अपूर्व कथा ॥ (१)
पूर्व काल देवों ने, असुरों से युद्ध किया ।
पूरे सौ सालों तक, भयानक युद्ध हुआ ॥
अपना सौ सालों का, जीवन है युद्ध ही ।
देव-असुर संग्राम का, नाम है जीवन ही ॥
तब असुर स्वामी का, नाम महिषासुर था ।
देवराज इन्द्र का, नाम पुरंदर था ॥ (२)
महाबली दैत्यों ने, देवों को हराया ।
महिष ने स्वर्ग छीन, इन्द्र पद छीना ॥ (३)
तब पराजित देवगण, ब्रह्माजी को लेके ।
गये वहाँ जहाँ पे, शंकर और हरि थे ॥ (४)
महिष के बल की, अपनी पराजय की ।
कथा सब उनको, देवों ने सुनाई ॥ (५)
सूर्य इन्द्र अग्नि वायु, चंद्र वरुण तथा ।
सब का महिष ने, छीन अधिकार लिया ॥ (६)

बनके सब का स्वामी, असुर ने देवों को |
निकाल दिया स्वर्ग से, भगा दिया भू को || (७)
असुरों के करतूत, और जो कुछ घटा |
प्रभु शरण में आके, देवों ने आ कहा ||
"माँगें हम प्रभु कृपा, हमें आश्रय दीजिये |
महिष के वध का, उपाय बता दीजिये ||" (८)
देव हैं अपने अंदर, दैविक शक्ति रूप में |
ज्ञान-संयम-भक्ति के, इश्वरीय रूप में ||
महिष है अहंकार, जिसने मन छीन के |
खूब पीड़ित कर दिया, जीव को जगत में ||
जीवन संग्राम में, जब देव हार होती |
अहंकार अपने मन, में पूरी छा जाती ||
क्रोधित हुए हरि शिव, देव कथा सुन के |
उनकी भौंहें तनी, मुँह टेढ़े हो गये || (९)
और अति क्रोध से, भरे श्री हरि के ही |
मुख से प्रकट हुई, एक तेज तभी || (१०)
ब्रह्मा शिव ने भी, बाकी देवों ने भी |
अपने शरीरों से, भारी तेज प्रकाशित की ||
देव तेज मिलके, एक संग हो गया |
दीप्यमान पर्वत, के जैसे वह लगा || (११)

देवताओं ने देखा, ज्वालाएँ तेज की |
दिशाओं में सभी, शीघ्र व्याप्त हो गयीं || (१२)
वह अनूप तेज जो, देव देहों से आया |
एक नारी रूप में, परिणत हो गया || (१३)
देवी का मुख बना, शंकर के तेज से |
हरि ने भुजायें दीं, केश मिले यम से || (१४)
चंद्र तेज से स्तन, इन्द्र से मध्य भाग |
वरुण से जंघा-उरू, भूमि से नितंब भाग || (१५)
ब्रह्मा से पैर उनके, पांव ऊँगुली सूर्य से |
कुबेर से नासिका, ऊँगुलियाँ वसु से || (१६)
प्रजापति तेज से, दाँत प्रकट हुए |
अग्नि के तेज से, तीनों नेत्र आ गये | (१७)
संध्या से भौहें आये, कर्ण वायु तेज से |
इस प्रकार बनीं देवी, कल्याणमयी तेज से || (१८)
महिष से पीड़ित, देवों ने तब देखा |
खुशी से माँ का, तेज स्वरूप प्यारा || (१९)
इसी तरह हम भी जब, अपने अंदर की ही |
देव शक्तियों को जगा, बना दें एक ही ||
तब होता अपने अंदर, आविर्भाव माँ का |
और खुशी से हम भी, समझें स्वरूप उनका ||

शंकरजी ने अपने, शूल से एक शूल दिया |
श्री हरि ने चक्र से, चक्र माँ को दिया || (२०)
वरुण ने शंख दी, अग्नि ने शक्ति दी |
धनुष-बाण वायु ने, देवी को प्रदान की || (२१)
सहस्र नेत्रों वाले, इन्द्र ने वज्र दिया |
एरावत हाथी का, घण्टा माँ को दिया || (२२)
वरूण ने पाश दी, यम ने दण्ड दिया |
ब्रह्मा ने कमण्डल, प्रजापति ने माला || (२३)
रोम कूपों में रश्मि तेज सूर्य ने भरा |
काल ने चमकती ढाल तलवार दिया || (२४)
क्षीरसागर ने उज्जवल हार दिव्य वस्त्र दी |
और दी चूड़ामणि, कुंडल-कंकण आदि भी || (२५)
बाजूबंद अँगूठियाँ, नूपुर भी प्रदान की |
विश्वकर्मा ने उज्जवल, अतिशय परशु दी || (२६, २७)
विभिन्न और अस्त्र, अभेद्य कवच भी दी |
देवी को समुद्र ने, अति सुन्दर भेंट की ||
छाती-सर पे धारण, करने के लिए दी |
कभी ना सूखने वाले, कमल-मालाएँ दीं ||
जलधी ने भेंट सुन्दर, कमल फूल किया |
सिंह वाहन और रत्न, हिमालय ने दिया ||

कुबेर ने मधु से, भरपूर पात्र दिया |
नागराज ने मणि से, शोभित हार दिया || (२८-३०)
सब देवों ने माँ को, बहुत सम्मान दिया |
अनेक आभूषण, अस्त्र शस्त्र भेंट किया || (३१)
देव भेंट से सीखें, हम समर्पण भावना |
कुछ ना है अपना, माँ को माँ का ही देना ||
उस समय बारम्बार, अट्टहास हँसीं माँ |
उनके विकट नाद से, नभ पूरा गूँज उठा || (३२)
माँ का उच्चस्वर नाद, कहीं ना समा सका |
समुद्र काँप उठे, विश्व में हलचल मचा || (३३)
पृथ्वी डोलने लगी, पर्वत भी हिलने लगे |
माँ सिंहवाहिनी, को देख बड़ी खुशी से ||
देवगण मिलके बोले, "देवी जय हो तुम्हारी |"
साथ ही मुनियों ने, भक्ति से स्तुति की || (३४, ३५)
त्रिलोकी को शोभित, असुरों ने जब देखा |
युद्ध के लिये तैयार, बढ़ आयी असुर सेना ||
"आह, यह क्या है?" क्रोधी महिष ने चीखा |
भगवती की ओर, सेना ले वह दौड़ा ||
पास पहुँच उसने, देखा रूप तेजस्वी | (३६, ३७)
देवी के चरणों से, दबी देखी पृथ्वी ||

मुकुट से रेखा-सी, खिंची हुई नभ में |
धनुष की ध्वनि, गूँज रही पाताल में ||
हज़ारों भुजाओं से, माँ ने हर एक दिशा |
को घेरा व उनका, महायुद्ध शुरू हुआ || (३९)
हर दिशा में वर्षा, अस्त्र-शस्त्र की हुई |
सभी दिशाओं में, एक दीप्ति फैल गयी ||
दैत्य सेनापति तब, चिक्षुर असुर था |
देवी से युद्ध करने, वह पराक्रमी आया || (४०)
वास्तव में महिष, की समर माँ देवी से |
है समर अहंकार, की दिव्य स्वरूप से ||
अहंकार की सेना में, हैं बहुत बड़े बड़े |
असुर जो हमारे, मन में भी हैं खड़े ||
अन्य दैत्यों के संग, युद्ध में चामर आया |
चतुरंगिणी सेना संग, लेके वह लड़ा || (४१)
साठ हज़ार रथ ले, उद्ग्रासुर आया |
एक करोड रथियों ले, महाहनु लड़ा ||
चिक्षुर समझ प्यारे, है भ्रम तेरे मन का |
चामर चपलता है, उदग्र घमण्ड तेरा ||
महा छली, असंतुलन, अस्थिरता मन की |
ये सब हैं असुर, महिष सेना में ही ||

महाहनु, असिलोमा, कुछ और नाम इनके |
आओ आगे कथा में, मिलते हैं इन सब से ||
पाँच करोड़ रथ ले, असिलोमा आया | (४२)
साठ लाख रथ संग, बाष्कल आ गया ||
हज़ारों हाथी घोड़े, परिवारित लाया | (४३)
पाँच करोड़ रथ ले, आ बिडाल लड़ा || (४४)
लड़ा परिवारित रथ, यहाँ-वहाँ चलाते |
और असुर सेना भी, खूब लड़ते रहे || (४५)
बड़े बड़े दैत्य अपनी, इस प्रकार युद्ध में |
विशाल सेना रथ ले, भारी युद्ध करने लगे|| (४६)
रथ हाथी व घोडों की, सेना से घिरा हुआ |
स्वयं महिषासुर, रणभूमि में खड़ा था || (४७)
माँ के संग दैत्यों ने, अस्त्रों से युद्ध किया |
किसी ने पाश फेंका, कोई शक्ति से लड़ा || (४८)
खड्ग से दैत्यों ने, देवी को मारना चाहा |
देवी ने भी क्रोध में, अस्त्रों से उनको मारा || (४९)
खेल में चण्डिका ने, मंत्र-शस्त्र वर्षा की |
दैत्य अस्त्र-शस्त्र, साथ ही काट डाली ||
तब देव ऋषि ने, हर्ष भरी स्तुति की |
श्रम बिना इश्वरी ने, और शस्त्र छोड़ी || (५०)

दैत्य सेना के असुर, हैं अहंकार के साथी |
हमारे मन को भी, पीड़ित करते वे ही ||
जनहित में माँ ने, युद्ध लीला ना छोड़ा |
सिंह वाहन क्रोध में, दैत्यों पे कूद पड़ा ||
सिंह गर्दन अपनी जब, हिला-हिला के चले |
दिख ने वे लगे तब, वन में अग्नि जैसे || (५१)
देवी के हर नि:श्वास, से एक सेना निकली |
हज़ार-हज़ार गण, आये हर साँस से ही || (५२)
परशु भिंडिपाल आदि, संग वे युद्ध करते |
देवी शक्ति से गण, शत्रु नाश करते गये || (५३)
साथ नागाड़ा शंख भी, गण बजाने लगे |
युद्ध महोत्सव में, मृदङ्ग बजा के चले || (५४)
इस बीच माँ ने भी, त्रिशूल खड्ग मारा |
और बहुत दैत्यों को, शीघ्र काट डाला || (५५)
घण्टे की ननाद से, कई मूर्छित हुए | (५६)
तो कई पाश में बंध के, खूब घसीटे गए ||
कुछ दैत्यों को माँ ने, खड्ग की मार से |
दो भागों में काटा और, नीचे वे गिर पड़े || (५७)
कुछ गदा की चोट से, बेहाल हो सो गये |
कई मुसल मार से, आहत गिर पडे || (५८)

कुछ दैत्यों की शूलसे, छाती फटी गिर पड़े |
कई माँ के बाणों की, वर्षा से मर मिटे || (५९)
अब दैत्य प्राणों से ही, हाथ धोने लगे |
गर्दनें उनकी कटीं, सर सब गिरने लगे || (६०)
भुजा कटी कहीं तो, गर्दन कहीं मरोड़ दी |
कई के जाँघें कटीं, हो गए धराशायी || (६१)
मध्यभाग में शरीर, कितनों के विदीर्ण हुए |
कितनों के देवी ने, हाथ पैर आदि चीर डाले || (६२)
दैत्यों को जब समझें, चिन्तन अपने मन की |
देखते हैं माँ कैसे, उन को काट डालतीं ||
मस्तक कट जाने पर, भी उठ दैत्य लड़े |
अच्छे अच्छे हथियार, हाथों में ले वे लडे ||
बहुतरे धड़ तुरही की, ध्वनी को सुनके |
नाचने लगे उस, लय के ही संग वे | (६३)
खड्ग शक्ति को लिए, असुर बिना सर के |
देवी को ललकारते, "ठहरो! ठहरो!" कहते || (६४)
जैसे असुर घायल भी, छोड़ें न रण भूमि को |
हमारी चिन्तायें भी, छोड़ें न मन क्षेत्र को ||
माँ की कृपा के बिना, हम कुछ न कर पायें |
"माँ, माँ, माँ" बुलायें, वो खुद आ सब करें ||

रथ हाथी असुर लाश, से भरा रणभूमि था |
इस के ही कारण वहाँ, चलना असंभव था || (६५)
गिरे हुए सेना से, खून इतनी निकली |
नदियाँ रुधिर की, वहाँ बहने लग गयीं || (६६)
अम्बिका ने शत्रु सेना, क्षण में ध्वंस किया |
जैसे अग्नि ध्वंस करे, क्षण में काष्ठ का ढेरा || (६७)
देवी वाहन सिंह, गर्दन हिला कर चले |
ज़ोर गरज के जैसे, शत्रु प्राण वो बटोरे || (६८)
जब देवी और गणों, को युद्ध करते देखा |
संतुष्ट हो देवों ने, स्वर्ग से फूल बरसाया || (६९)
हम भी माँ ओर जब, कदम अपना बढ़ायें |
देव शक्ति आशीर्वाद, के फूल बरसायें ||
सत्य सनातनी माँ, महिष सेना के वध की |
तेरे अमृत पदों में, है अर्पित कहानी ||
स्वीकारो इसे प्यारी, और साथ हमको भी |
माँगे बूंद भक्ति की, तेरी यह छोटी बच्ची ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“महिशासुरकी सेनाका वध” नामक दूसरा अध्याय पूरा हुआ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ३

इस अध्याय में महिषासुर मर्दिनी, देवों के शत्रु महिषासुर तथा उसके सेनापतियों का नाश करती हैं | इस अध्याय को पढ़ते समय हमे ध्यान रखना चाहिए कि यह पूरा युद्ध वास्तव में हमारा जीवन संघर्ष ही है | जब हम असुरों के बारे में पढ़ते हैं और उनका सूक्ष्म रूप जान लेते हैं, हमें ज्ञात होता है कि कैसे हम माँ को सहायता के लिए पुकारें जिससे असुरों का नाश हो और हम अपने इस जीवन संग्राम में विजयी बनें |

पुस्तक के अन्त में, सूची दो इन विभिन्न असुरों का नाम और उनका भावार्थ देता है |

इस अध्याय में प्रत्येक युद्ध का वर्णन हमें अपनी साधना का ही वर्णन समझना चाहिए | माँ का वाहन सिंह है जो धर्म का प्रतीक है | इस कथा में हम देखते हैं कि असुर चामर जो मन की डगमगाहट अर्थात् अस्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है, धर्म के विरुद्ध युद्ध करता है और उस की पराजय होती है | हम जान पाते हैं कि जब हमारा

ध्यान धर्म पर होता है तो हमारी विजय अपने मन की अस्थिरता पर होगी |

आगे देखते हैं कि बाष्कल जो “पुरानी यादों” का प्रतीक है ज्ञान की तलवार से मारा जाता है | इससे हम सीखते हैं कि जब पुरानी स्मृतियाँ हमें सतायें, हमें विवेक का उपयोग करके ज्ञान की सहायता से मन को संयम में लाना चाहिए|

माँ भवानी का महिषासुर के बीच का युद्ध दो बातें सिखाता है | महिषासुर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए, अनेकों रूप धारण करता है | इसी तरह हमारे जीवन में भी अहंकार के अनेकों रूप हैं जो अपना स्वार्थ पूरा करते हैं |

महापराक्रमी महिषासुर का नाश कैसे हो और इस के लिए हमें क्या करना होगा ? हम देखते हैं कि हमें इस कार्य के लिए माँ को निमंत्रित करना पड़ता है और उन्हें मधु-पान कराना है | यह मधु पान क्या है? हमारे हृदय की शुद्ध भक्ति | माँ हमारी भक्ति ग्रहण करके हमारे भीतर छिपे महिषासुर का नाश निश्चय ही कर देंगी |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ३

ध्यान

जगदाम्बा के श्रीअङ्गों की कान्ति |
सहस्र बाल-सूर्य के समान ही ||
अरुण वस्त्र मुण्डमाला धारण किये |
रक्त चन्दन स्तनों पर लगाए हुए ||
करकमलों में जप माला धारण किये |
और मुद्राएँ विद्या, अभय, वर के लिये ||
मुख कमल सुशोभित तीन नेत्रों से |
मस्तक अलंकृत चन्द्र सहित मुकुट से ||
कमलासन पर विराजी उन देवी को |
शुद्ध भक्ति पूर्वक प्रणाम हमारी हो ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ३

ऋषि देते हैं आगे, और प्रकाश |
कैसे हुआ महिषासुर का नाश || (१)
नष्ट सेना देख, चिक्षुर सेनापति |
कुपित होकर आगे, बढ़े शीघ्र गति || (२)
देवी पर बाणों की, ऐसे वर्षा की |
जैसे मेरु पर्वत, पर बरसे पानी || (३)
देवी ने तो खेल-खेल, में बाणें काटीं |
उसके रथ, घोड़े, सारथी नष्ट की || (४)
काट दिया धनुष और ऊँची ध्वजा |
बाणों से शरीर में घाव किया || (५)
नष्ट हुआ अश्व, धनुष, सारथी |
ढाल-तलवार ले, वह आया पैदल ही || (६)
तेज़ तलवार मारा, सिंह के सिर पे |
वार किया देवी, के भुजा में || (७)
माँ के पास आते, तलवार चूर्ण हुआ |
शूल तब क्रोध से, उसने निकाला || (८)
सूर्यमंडल के भाँति, चमका वो शूल |
भद्रकाली माँ पे, चलाया जो शूल || (९)
अस्त्र देख माँ ने, निज शूल चलाया |
अस्त्र चिक्षुर दोनों के, टुकड़े कर डाला || (१०)

जब मर गया, चिक्षुर सेनापति |
देव विरोधी चामर, आया चढ़ हाथी || (११)
समझो चिक्षुर प्यारे है, विक्षेप मन में |
चामर चपलता जो, मन अस्थिर करे ||
हर असुर है बाधा, ले जाये हमें |
दूर सत्य बोध से, माँ के चरणों से ||
माँ तो हैं कृपा मयी, हमें वो बुलातीं |
असुर नाश करतीं, निज गोद में लेतीं ||
अम्बिका पर चामर ने, शक्ति चलायी |
माँ ने हुंकार से ही, शक्ति तोड़ी || (१२)
शक्ति चूर देख चामर, क्रोधित हुआ |
शूल चलाया उसे भी, माँ ने काट डाला || (१३)
देवी का सिंह उछलकर, हाथी चढ़ बैठा |
दैत्य के साथ बाहुयुद्ध, करने लगा || (१४)
लड़ते-लड़ते दोनों, पृथ्वी पे आये |
क्रोध में एक दूसरे, से लड़ते रहे || (१५)
तब अचानक सिंह, ऊपर उछला |
पंजा मार चामर, का गर्दन काटा || (१६)
तभी उदग्रासुर माँ, हाथ मर गया |
शिला वृक्ष आदि से, उसने मार खाया ||
दंत, मुष्टि थप्पड़ों, से चोट लगी |
करालासुर ने भी, जान त्याग दी || (१७)

क्रोध भरी देवी ने, कितनों को मारके |
एक-एक कर कचूमर, सब के निकाले || (१८)
वास्तव में माँ का क्रोध, है माँ का प्यार |
समझो यह सत्य, ओ मेरे प्यारे यार ||
बार-बार माँ जो असुर, संहार करतीं |
इस से हमें ही तो, पावन बनातीं ||
गदा से उद्धत को, मौत दिलाया |
भिन्दीपाल से बाष्कल, को स्वर्ग पठाया ||
बाणों से तम्रासुर, को आघात किया |
अन्धकासुर का भी, दम थोड़ दिया || (१९)
खड्ग से विदालासुर, का सर काटा |
दुर्धर, दुर्मुख को भी, यमलोक भेजा || (२०)
ये दैत्य सेनापति हैं, अपने अंदर ही |
इनका ध्वंस होता, जब माँ आतीं ||
दुर्धर, दुर्मुख, कराल, हैं इनके कुछ नाम |
मन को पीडा देना, है इनका ही काम |
इस प्रकार जब सेना, का संहार देखा |
दैत्य राज ने महिष, रूप धारण किया ||
वो देवी के गणों को, त्रास देने लगा |
किसी को थूथुनसे, मारने लगा || (२१)
किसी पर खुरों से, प्रहार किया |
तो किसी-किसी को, पूँछ से चोट दिया || (२२)

कुछ गणों को बड़े, ही वेग से मारा |
कितनों को घनघोर, निनाद से मारा ||
किसी को चक्कर, देकर मार दिया |
कितनों को पवन श्वास, से उड़ा दिया || (२३)
हम जब बढ़ें सत्य, को जानने आगे |
तब अहंकार हमें, बार-बार मारे ||
ऐसे बहु गणों को, छिन्न-भिन्न करके |
देवी के सिंह ओर महिषासुर झपटे || (२४)
देवी वाहन सिंह जानो, है सत्य धर्म ही |
अहंकार चाहे उसको, तो मिटाना ही ||
इससे जगदम्बा को, अति क्रोध हुआ |
उस तरफ महिषासुर, भी कुपित हुआ ||
धरती शूरवीर, खुरों से खोदता |
गरजते हुए, पर्वत फेंकता || (२५)
उसके ऐसे वेग से, चक्कर देते ही |
धरती माँ वहीं पर, फटने लगीं ||
महिष की पूँछ की, मार की ज़ोर से |
समुद्र आया भू पे, हर एक ओर से || (२६)
सींगों की मार से, मेघ टुकड़े हुए |
साँस हवा से उड़ते, पर्वत गिर पड़े || (२७)
क्रोध भरे महिष को, जब माँ ने देखा |
चण्डिका ने भी महा क्रोध पान लिया || (२८)

पाश फेंक माँ ने, उसे बाँध लिया |
उसने तभी महिष रूप, को त्याग दिया || (२९)
सिंह रूप में तब, प्रकट हुआ वो |
जब माँ लगीं उसकी, मस्तक काटने को ||
उसी क्षण वह खड्गधारी पुरुष बना |
देवी के सम्मुख आ, खड़ा हो गया || (३०)
बाणों से टुकड़े माँ ने करना चाहा |
तो एक महान गज वह बन गया || (३१)
सूँड़ से महासिंह, को खींचने लगा |
ज़ोर-ज़ोर से गर्जन, करता वह रहा ||
देवी ने तलवार से, सूँड़ काट डाली |
महादैत्य ने पुनः, भैंस रूप ले ली ||
पहले की भाँति फिर, सबको क्षुब्ध किया |
त्रिलोक के प्राणियों, को तंग किया || (३२)
इससे जगदम्बा को, बहुत क्रोध आया |
उन्होंने तब उत्तम, मधु पान किया ||
प्यारे अहंकार का, नाश कैसे होता |
माँ का मधु पान से, उसका ध्वंस होता ||
वास्तव में यह मधु, अमृत है भक्ति की |
हम भी दें माँ को, यह मधु प्रेम की ||
मधु से उनकी आँखें, लाल-लाल हो गयीं |
और वे ज़ोर ज़ोर से, हंसने लगीं || (३३)

उधर वो असुर भी, बल मद से भरा |
ज़ोर-ज़ोर से वो, गर्जन करने लगा || (३४)
सींगों से उठाने, पर्वत लगा |
चण्डिका के ऊपर, फेंकने लगा || (३५)
बाणों से पर्वतों को, चूर्ण कर देवी |
लाल मुख लड़खड़ाती, वाणी में बोलीं || (३६, ३७)
"ओ मूढ़ गरज, गरज ले तब तक |
मैं मधु का पान, कर न लूँ जब तक ||
तेरा मरण है तो, मेरे हाथों ही |
शीघ्र तब देव सब, गरजेंगे भी ||" (३८)
तब कहा मेधास मुनि, ने राजा को |
आगे क्या हुआ, ध्यान से आप सुनो || (३९)
बात कह उछल देवी, महिष पे चढ़ीं |
पैर से दबाके, गले पर शूल डाली || (४०)
पैर से महिष, तो था अब दबा |
फिर भी वो आधा, निकल पाया ||
देवी ने फिर अपने, बल प्रभाव से |
रोक लिया उसे पूरा, निकलने से || (४१)
निकला हुआ दैत्य, युद्ध करने लगा |
माँ ने खड्ग से उसका, सिर काट डाला || (४२)
भागे दैत्य सेना, करके हाहाकार |
प्रसन्न देव करने, लगे जय-जय कार || (४३)

महर्षियों और देवों ने, उस देवी की |
हर्ष भरे दिल से, तब स्तुति तब करी ||
गंधर्वों ने मृदु, गायन तब किया |
सुन्दर अपसराओं, ने नृत्य किया || (४४)
सत्य सनातनी माँ, यह सरल कथा |
महिषासुर वध का, स्वीकारो कृपया ||
स्वीकारो श्री चरणों में, हम सब को भी |
शुद्ध भक्ति का वर, दे दो हमें प्यारी ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“महिशासुर वध” नामक तीसरा अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ४

इस अध्याय में इन्द्र और सभी देवता माँ दुर्गा की स्तुति करते हैं | इसीलिए इसे शक्रादि स्तुति कहते हैं | माँ ने देवताओं से कहा कि जब कभी वे उन्हें याद करेंगे, वे उन्हें आत्मिक दृष्टि प्रदान करेंगी और उनकी बड़ी से बड़ी आपदा को दूर करेंगी | यह अध्याय रहस्य, सन्देश और साधक के लिए आदेश से भरा है |

उदाहरणार्थ, नवे श्लोक में, देवों ने कहा कि जो मुनिगण एक निष्ठा से मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें तपस्या करनी पड़ती है जो अकल्पनीय है | फिर वे जो पूर्ण स्वतंत्रता, मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करते हैं, वह भी वास्तव में माँ स्वयं ही हैं |

इन श्लोकों में संकेत है कि किस प्रकार का व्यवहार हमें किस प्रकार का वरदान दिलाता है | उदाहरणार्थ श्लोक ५ से हम जानते हैं कि यदि हम सच्चा बर्ताव करें तो माँ लक्ष्मी रूप धारण करके आती हैं | अगर हम बुराई और पापों का मार्ग अपनायें तो वही माँ हमारे कष्ट का कारण बनती हैं |

वे ही दुखों का कारण बनती हैं | हम अपने मन को पवित्र रखें तो जगत माता, ज्ञान रूप बनकर हमारे हृदयों में विराजमान हैं | यदी हम सत्य आचरण का पालन करें तो माँ श्रद्धा रूप में प्रकट होती हैं | इस तरह हमारे अलग-अलग कर्मों और भावनाओं के अनुसार माँ हमारे मन में और जीवन में अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत होती हैं|

जब हम इस स्तुति को ध्यान पूर्वक गाते हैं, हम सीखते हैं कि हमारा जीवन कैसे संगठित किया जा सकता है जिससे दुर्गा माँ उस में शुद्ध प्रेम के रूप में आके हमें अपने श्री चरणों के प्रति परम भक्ति का आशीर्वाद दें |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ४

ध्यान

काले बादल की भाँति श्यामल कान्ति जिनकी |
सिद्धि चाहने वाले करें सदा सेवा उनकी ||
जिनको सब ओर से देव गण घेरें |
उन “जाया” नाम दुर्गा की ध्यान करें ||
अर्धचन्द्र शोभा पाती मस्तक पर उनकी |
हाथों में शङ्ख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल रखतीं ||
कुटिल कटाक्षों से शत्रु को भय देतीं |
तीन नेत्र वाली देवी सिंह कंधे पर बैठीं ||
परिपूर्ण कर रहीं तेज से त्रिलोकी को |
बार बार नमन हमारी उन देवी को ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ४

जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो ||
बोले आगे मेधास मुनि | सुनिए राजा देव स्तुति || (१)

देवी ने जब मारा उसको, पराक्रमी महिषासुर को |
देव गण ने सिर झुकाके, माँ को ही नमन किये || (२)

ओ देवी तुम देवों की, शक्ति की स्वरूपा हो ही |
तुमने अपने शक्ति से ही, जगत पूर्ण व्याप्त कर दी ||
सब देव व ऋषि जन भी, पूजें जगदम्बा को ही |
यह नमन भक्ति भरी, स्वीकारो माँ भगवती || (३)

अद्भुत प्रभाव बल तेरा माँ, कोई वर्णन कर सके ना |
विष्णु, शिव और ब्रह्माजी, उन की भी सामर्थ नहीं ||
भगवती माँ ओ चण्डिका, विचार आप ये करो ज़रा |
जग का पूरा पालन हो, अशुभ भय का नाश भी हो || (४)

पुण्यात्माओं के घर लक्ष्मी, पापियों के घर अलक्ष्मी |
निर्मल पुरुष के दिल में बुद्धि, सत्पुरुष में श्रद्धा रूपी ||
कुलीन जन में लज्जा रूपी, प्रणाम तुझे दुर्गा देवी |
पालन करो माँ जग सारी, बार-बार नमन हमारी || (५)

अचिन्त्य रूप तेरा देवी, वर्णन के हम काबिल नहीं |
दैत्यों का नाश करने वाली, धर्म युद्ध में प्रकट हुईं ||
अद्भुत चरित वीरता तेरी, वर्णन हो तो कैसे देवी ?
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो || (६)

त्रिगुणात्मिका हो फिर भी, तुम गुणातीत माँ जननी |
विष्णु, महेश और ब्रह्माजी, भी ना जानें लीला तेरी |
विश्व का आश्रय तुम ही, यह जगत सब अंश तेरी |
क्योंकि परमा प्रकृति भी, तुम ही तो हो प्यारी देवी ||
(७)

यज्ञों में देवों की तृप्ति, स्वाहा शब्द जो आप जननी |
पितरों को भी मिले तृप्ति, स्वधा से जो आप ही देवी ||
(८)

मोक्ष प्राप्ति साधन तुम्ही, अचिन्त्य व्रत स्वरूपिणी |
वे मुनि जो मोक्ष चाहें, तत्व को ही सार मानें ||
इन्द्रियों को वश में करके, सब दोषों को दूर हटाके |
एकमात्र अभ्यास करते जो, वो परा विद्या तुम्ही हो ||
(९)

माँ तुम हो शब्दस्वरूपा, ऋग यजुर के निर्मलता का |
सामवेद के दिव्य पद भी, और उद्गीत माँ हो तुम्ही ||
वेद त्रयी माँ ही बनतीं, विश्व की कल्याण माँ करतीं |

उत्पत्ति और पालन करतीं, तुम्ही माँ सब पीड़ा हरतीं ||
(१०)

सब शास्त्रों का ज्ञान देतीं, मेधा शक्ति वो माँ तुम्ही |
दुर्गम भव सागर से लेतीं, नौकारूपी दुर्गा देवी ||
विष्णु हृदय वास करतीं, तुम्ही भगवती लक्ष्मी |
चन्द्रशेखर मन निवासी, तुम्ही हो माँ गौरी प्यारी ||
(११)

आपका मुख मुस्कान से भरा, जैसे दीप्त पूर्ण चंद्रमा |
स्वर्ण की यह सुन्दर कान्ति, अद्भुत मुख महिष ने देखी ||
फिर भी क्रोध से प्रहार की, यह है आश्चर्य की बात ही ||
(१२)

और आश्चर्य बात है कि, जब वही मुख क्रोध से भरी |
भ्रू की वक्रता से कराल, उदित चन्द्र जैसे लाल ||
महिष ने ये मुख देखा, तो भी प्राण कैसे ना छोड़ा?
देख यमराज क्रोध से भरा, कैसे रहा जीवित भला?
(१३)

हे देवी आप खुश रहें, सब जगत का उद्धार करें |
कुपित आप होतीं हैं जब, संहार कर देतीं हैं तब ||
जैसे महिषासुर की भी, विशाल सेना क्षण में ही |
हो गयी नष्ट पूरी, कोप से माँ आप की || (१४)

जिनसे तुष्ट उन्हें माँ देतीं, धन यश व सम्मान प्राप्ति |
धर्म शिथिल होता नहीं, धन्य माने जाते वही || (१५)

पुण्यात्मा प्रतिदिन करें, धार्मिक कर्म श्रद्धा भरे |
उन्हें फिर स्वर्ग ले जातीं, तीनों लोक में फल देतीं ||

(१६)

अम्बा तुम्हें याद करें तो, क्षण में भय हर लेती हो |
स्वस्थ पुरुष चिंतन करें, तुम से कल्याण बुद्धि पायें ||
दुःख दरिद्र भय हरतीं, आपके जैसा कोई नहीं |
जो तैयार रहे हमेशा, सबका उपकार करने सदा ||

(१७)

राक्षसों को मार देतीं, जगत सब को सुखी करतीं |
राक्षसों का पाप इतना, उनको पड़े नर्क में रहना ||
माँ तो उनको स्वर्ग दिलातीं, अपने हाथों युद्ध में मारतीं ||
निश्चय ऐसे सोचतीं माँ, शत्रु वध जब करतीं माँ ||

(१८)

माँ शत्रु को देखते ही, भस्म उनको क्यों ना करतीं ?
शत्रु पर शस्त्र चलातीं, उन पर भी कृपा दिखातीं ||
अस्त्रों से पवित्र बनें, उत्तम लोक को प्राप्त करें |
इस प्रकार रिपु प्रति भी, विचार माँ का उत्तम है ही ||

(१९)

आपके खड्ग की तेज प्रभा से, त्रिशूल की घोर दीप्त से |
असुरों की दृष्टि कैसे, नाश नहीं हुई वो ऐसे ||
उन्हें मिला दर्शन आपका, सुन्दर मनोहर मुख का |
चंद्र संग रश्मियाँ जैसे, मुख तुम्हारा शीतल वैसे ||

(२०)

दुराचार की दुष्टा हरना, माँ यह है स्वभाव तुम्हारा |
साथ अनुपम रूप तेरा, चिंतन कभी ना हो सकता ||
वो शत्रु जो करें देव नाश, उनका माँ करें सर्वनाश |
माँ की वीर पराक्रम देखी, शत्रु पर दया भी देखी ||

(२१)

आपके इस पराक्रम की, तुलना नहीं की जा सकती |
शत्रु को भय देने वाला, शोभा से मन हरने वाला ||
अतुलित रूप तुम्हारा क्या, और कहीं दिख सकता?
एक ओर से हृदय कृपा, दूसरी युद्ध में निष्ठुरता ||

तीनों लोक में तुम में ही, ये दो बातें संग दिखतीं |
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो ||

(२२)

शत्रुओं को रण में मारा, और उन्हें स्वर्ग पहुँचाया |
उन्मत्त दैत्यों से हमें था, जो भय वो ही दूर किया ||
स्वीकारो प्यारी जननी, बारम्बार नमन हमारी ||
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो || (२३)

शूल से रक्षो तुम हमें, खड्ग से भी अम्बिके |
घण्टा की ध्वनि से भी, धनुष की टंकार से भी || (२४)

पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में, रक्षो हमें चण्डिके |
त्रिशूल को घुमा-घुमा के, इश्वरी रक्षो उत्तर में || (२५)

सुन्दर भी, भयंकर भी, आपके रूप माँ देवी |
उन रूपों से आप हमें, और भू की रक्षा करें || (२६)

अम्बिके खड्ग त्रिशूल गदा, और भी अस्त्र रहें सदा |
आपके ही कर कमलों में, उन से सदा रक्षो हमें || (२७)

अब बोले आगे कहानी, राजा से मेधा मुनि ||
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो || (२८)

देवों ने स्तुति करी, जगत्माता दुर्गा की |
दिव्य पुष्प-चन्दन से भी, भक्ति पूर्ण पूजन करी ||
(२९)
और सुगन्धित धूप भी, प्रेम से अर्पण की |
तब प्रसन्न हो माँ ने करी, प्रणाम और बात यह कही |
(३०,३१)
“मुझसे आप सब देवों जो, चाहते हो वो सब कहो ||” (३२)
देवी के वचन सुनके, बोले देव सब हाथ जोड़के |
(३३)

“अम्बा आप ने सब पूर्ण की, शेष कोई इच्छा नहीं ||
(३४)
क्योंकि हमारा शत्रु बड़ा, महिषासुर तो मारा गया |
और कोई वर आप देंगी, तो हम माँगे महेश्वरी |
जब भी आपको याद करें, विपत्ति आप नाश करें ||
(३५)
जो मानव इस स्तोत्र से ही, करे अम्बिका की स्तुति |
(३६)
उसे समृद्धि वैभव देदें, उसकी धन सम्पत्ति बढ़े ||
इस तरह आप सदा हम से, प्यारी माँ प्रसन्न रहें |
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो ||” (३७)

आगे बोले मेधास मुनि, राजा ने बात ध्यान से सुनी |
(३८)
ताकि हो कल्याण जग का, देवों ने माँ को हर्षाया |
“तथास्तु” बोल भद्रकाली, अन्तर्ध्यान तभी हो गयीं ||
(३९)
हे राजा! पूर्वकाल में, त्रिलोक के हित के लिये |
देवताओं के शरीर से, देवी प्रकट हुईं कैसे |
वह कहानी मैंने कही, और आप ने ध्यान से सुनी || (४०)

अब पुन: गौरी देवी ने, शरीर में प्रकट होके |
वध किया शुम्भ-निशुम्भ का, उन दो दुष्ट दैत्यों का ||
(४१)

सब लोकों की रक्षा करने, देवों का उपकार करने |
वह प्रसंग सुनो अब मुझ से, श्रवण कीजिए ध्यान से ||
(४२)

सत्येश्वर माँ सनातनी, स्वीकारो शक्रादिस्तुती |
अर्पित अमृत पदों में, सदा आपकी छोटी बेटी ||

जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो ||
जय माँ, जय माँ, जय माँ बोलो |
जय माँ, जय माँ, जय माँ जपो ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“शक्रदिस्तुति” नामक चौथा अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय ५

अध्याय पांच से लेकर अध्याय तेरह तक दुर्गा सप्तशती का तीसरा खण्ड है | यह खण्ड पांचवे अध्याय से प्रारम्भ होता है जहाँ असुर फिर से देवों को परास्त कर देते हैं | असुरों के नेता दो भाई हैं जिनका नाम शुम्भ और निशुम्भ है | शुम्भ का सूक्ष्म अर्थ है स्व-अभिमान और निशुम्भ का अर्थ है अपने आप को अप्रधान, छोटा या नीचा समझना | निशुम्भ स्व:निंदा का प्रतीक है |

जब देव गण स्वयं की हार देखते हैं तो वे माँ का वरदान याद करते हैं कि यदि वे शुद्ध मन से भक्ति-युक्त प्रार्थना करेंगे तो देवी माँ फिर प्रकट होंगी | वे हिमालय पर जाकर अत्यंत मधुर श्लोकों से माँ की स्तुति करते हैं | देव गण समझ लेते हैं कि माँ ही वह शुद्ध चैतन्य रूप हैं जो सभी रूपों में प्रकट हो रही हैं | वे माँ के सामने नत-मस्तक होते हैं और पांच बार नमन करते हुए जाप करते हैं - नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नम: | यह जाप पाँच कर्म इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ और पाँच भूतों का प्रतिनिधित्व करता है |

माँ कौशिकी रूप में प्रकट होती हैं और दो असुर (चण्ड और मुण्ड) उनको देखते हैं और तुरन्त ही दैत्य राजा शुम्भ से कहते हैं कि आप उस सुन्दर स्त्री से विवाह करें | चण्ड तथा मुण्ड हमारे अन्दर की क्रोध और कामना वासना का प्रतिनिधित्व करते हैं | ये दोनों हमें विवश करते हैं कि हम अपनी प्रत्येक इच्छा हर मूल्य पर प्राप्त करें |

कामना व क्रोध के उकसाने पर शुम्भ एक दूत बुलातें हैं | वह दूत विवाह का प्रस्ताव लेकर माँ के पास जाता है | माँ तीन शर्तें रखती हैं | पहल शर्त है कि माँ शुम्भ से विवाह करेंगी यदि वह उन्हें युद्ध में पराजित करे | दूसरा वह अपना अहंकार समाप्त करे और तीसरा अपनी सारी शक्तियों को माँ में विलीन कर दे |

माँ के भक्त होने के नाते हम इससे क्या सीख सकते हैं ? जब हम सब कृति को माँ की माया और लीला की तरह साक्षी बनकर देख पायें और इसमें लिप्त ना रहें, हम पहली शर्त पूरा करते हैं | जब हम माँ को ही सारी सृष्टि में देख पायें और भक्ति, प्रेम और समर्पण के साथ माँ का नमन करें तब हम माँ की अंतिम दो शर्तें पूरी करते हैं | ऐसा कर के माँ के श्री चरणों में सदा जे लिए रहते हैं |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय ५

ध्यान

जो अपने कर कमलों में, घण्टा, शूल, हल रखतीं |
मूसल, शङ्ख, धनुष-बाण, चक्र जो धारण करतीं ||
शरद् ऋतु के चंद्र जैसे, है सुंदर कान्ति जिनकी |
शुम्भ आदि दैत्यों का, जो हैं नाश करने वाली ||
गौरी शरीर से आईं, त्रिलोक का आधार भूता |
उन महा सरस्वती देवी का,
भजन करता हूँ मैं सदा ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ५

बात है पूर्व काल की ।
शुम्भ निशुम्भ दो असुरों की ॥ (१)
उन्होंने इन्द्र से छीन लिया ।
राज्य यज्ञ भाग ले लिया ॥ (२)
सूर्य, चंद्रमा वरुण का ।
यम, कुबेर और अग्नि का ॥
सबका अधिकार वे ले गये ।
सबका कार्य वे करने लगे ॥ (३)
देवों का अपमान किया ।
राज्य भ्रष्ट व पराजित किया ॥
शक्तिहीन कर देवों को ।
स्वर्ग से भगा दिया उनको ॥ (४)
साधक समझो कब होती ।
दैत्य विजय हम में भी ॥
जब दिल की दिव्य भावना ।
को भगा देती दुष्टता ॥
प्रभु चिन्तन हम छोड़ के ।
खुद पे ही मनन करते ॥
तब देव भाग जाते हम से ।
असुर शक्ति मन राज करे॥
तिरस्कृत ऐसे देवता ।

ने याद किया अपराजिता ||
माँ ने दिया था हमें वो वर |
आपत्ति में याद करने पर || (५)
माँ तत्काल ही कर देंगी नाश |
आपत्तियों का पूर्ण विनाश | (६)
ऐसे देव विचार कर के |
मिलके हिमालय पर गये ||
वहाँ भगवती विष्णु माया की |
करने लगे प्रेम से स्तुति || (७)
वहाँ देव गण गाने लगे |
परम भक्ति युक्त मिलके बोले || (८)
नमस्कारें तुझे महादेवी |
शिवा प्रकृति भद्रा देवी ||
हम लोग संयम मन से ही |
नमस्कारें सदा माँ जननी || (९)
रौद्री, नित्या, गौरी, धात्री |
प्रणाम माँ सततं तुझे ही ||
नमस्कारें तुझे ज्योत्स्नामयी |
सुखास्वरूपा चन्द्ररूपिनी || (१०)
माँ देती कल्याण वृद्धि |
सिद्धि रूपा भी तुम्ही देवी ||
असुरशक्ति और राजलक्ष्मी |
बार-बार प्रणाम शिवशक्ति || (११)

नमस्कार तुझे माँ दुर्गा |
तुम्ही दुर्गपारा और सारा ||
सर्वकारिणी ख्याति कृष्णा |
धूम्रा देवी प्रणाम सदा || (१२)
अत्यंत सौम्य रूपिणी |
प्रणाम तुझे रौद्ररूपिणी ||
बारम्बार नमस्कारें जननी |
आधारभूता कृती देवी || (१३)
सब प्राणियों में जो देवी | विष्णुमाया कही जातीं ||
प्रणाम उनको, प्रणाम उनको | बारम्बार प्रणाम उनको ||
(१४-१६)
सब प्राणियों में जो देवी | चेतना कहलातीं ||
नमस्कार उन्हें,नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(१७-१९)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं बुद्धि रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें ||
(२०-२२)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं निद्रा रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(२३-२५)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं क्षुधा रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें||
(२६-२८)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं छाया रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें ||
(२९-३१)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं शक्ति रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(३२-३४)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं तृष्णा रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(३५-३७)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं क्षान्ति रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें ||
(३८-४०)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं जाति रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(४१-४३)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं लज्जा रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(४४-४६)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं शान्ति रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें || (४७-४९)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं श्रद्धा रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(५०-५२)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं कान्ति रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(५३-५५)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं लक्ष्मी रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें || (५६-५८)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं वृत्ति रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(५९-६१)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं स्मृति रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(६२-६४)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं दया रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें || (६५-६७)

जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं तुष्टि रूप ले के ||
प्रणाम तुझे माँ, प्रणाम तुझे, बारम्बार प्रणाम तुझे ||
(६८-७०)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं माता रूप ले के ||
नमस्कार उन्हें, नमस्कार उन्हें, बारम्बार नमस्कार उन्हें ||
(७१-७३)
जो देवी सब प्राणियों में | रहती हैं भ्रान्ति रूप ले के ||
नमस्कारें, नमस्कारें, बार-बार चरण नमस्कारें || (७४-७६)

जो जीवों में इन्द्रियों की | हैं देवी अधिष्ठात्री ||
ऐसे सर्व व्यापी देवी | सदा-सदा नमन तेरी ||

(७७)

जो देवी चेतना शक्ति | से जगत को व्याप्त करतीं ||
बार-बार करें चरण प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम, माँ प्रणाम||

(७८-८०)

पूर्वकाल में देवों ने | इन्द्र के नेतृत्व में |
बहुत दिनों तक देवी की| यह स्तुति भक्ति से की ||
उन्होंने अपने अभीष्ट की | प्राप्ति के लिए स्तुति की ||
वह कल्याणमयी ईश्वरी | साधन भूता हमारी भी |
कल्याण और मङ्गल करें | सब आपत्ति नाश करें ||

(८१)

दैत्य करें जब अत्याचार | देव करें याद माँ का प्यार ||
याद करें वे परमेश्वरी को | भक्ति से करें प्रणाम उनको ||
भक्ति युक्त स्मरण करें जब | देवी माँ वहाँ आ जाएँ तब||
आके विपत्ति नाश करें | ओ माँ! तुम को हम पुकारें ||

आओ माँ दूर करो हमारी |
अभी ही यह संकट भारी || (८२)
मेधास मुनि ने तब कहा |
आगे की अब सुनो कथा || (८३)
इस प्रकार देवों ने की |
भगवती माँ की प्रेम स्तुति ||

तब वहाँ आयीं माँ पार्वती |
गंगा स्नान करने आई देवी || (८४)
उन सुन्दर भौहों वाली ने |
पूछा उन सब देवों से ||
"आप लोग यहाँ पे किसकी |
कर रहे हैं भक्ति युक्त स्तुति?"
तब माँ के शरीर कोश से ही |
प्रकट होके शिवा माँ बोलीं | (८५)
"तिरस्कृत शुम्भ दैत्य से |
पराजित निशुम्भ से ||
देव सब आये यहाँ मिलके |
मेरी स्तुति करेने दिल से ||" (८६)
पार्वती के शरीर कोष से ही |
अम्बिका की उत्पत्ति हुई ||
समस्त लोकों में "कोशिकी"|
नाम से ही वे कही जातीं || (८७)
कोशिकी के प्रकट होते ही |
पार्वती कृष्ण वर्ण हो गयीं ||
"कालिका" उनका नाम पड़ा |
हिमालय में उनका निवास बना || (८८)
चण्ड और मुण्ड दो दैत्य थे |
शुम्भ-निशुम्भ के वो सेवक थे ||
देखा उन्होंने मनोहर रूप |

अम्बिका देवी का दिव्य स्वरूप ॥ (८९)

फिर वो शुम्भ के जाके पास ।
बोले "राजा सुनो बात खास ॥
एक अत्यंत सुन्दरी स्त्री ।
हिमालय पर्वत पर रहती ॥
ऐसी दिव्य कान्ति उसकी ।
हिमालय को उज्जवल कर रही ॥
वैसा उत्तम रूप किसी ने भी ।
देखा ना होगा कहीं भी ॥
हे असुरेश्वर पता कीजिए ।
वो देवी कौन उसे लीजिए ॥ (९१)
स्त्री रत्न वह है अनोखा ।
प्रत्येक अंग सुन्दर उसका ॥
दिशाएँ सब उसके प्रभा से ।
जगमगा हैं अभी उठे ॥
हे दैत्य राज वह अभी ।
है हिमालय पर ही ॥
अगर आप अभी चाहें ।
तो आप ही उसको देखें ॥ (९२)
प्रभो तीनों लोकों में मणि ।
और हाथी व घोड़े आदि ॥
जितने भी रत्न हैं वो सब ।
आप के घर में हैं अब ॥ (९३)

गजराज ऐरावत हाथी |
और पारिजात वृक्ष भी ||
उच्चै:श्रवा नाम का घोड़ा |
इन्द्र से आपने है लिया || (९४)
विमान हंसों से जुड़ा हुआ |
आप ही के आँगन में खड़ा |
उस रत्नभूत विमान को |
ब्रह्मा से आपने लिया जो || (९५)
महापद्म नामक निधी |
कुबेर से आपने छीनी ||
समुद्र ने आपको भेंट दी |
किञ्जल्किनी नाम माला की ||
वह सुशोभित केसरों से|
कभी न सूखें कमल उसके || (९६)
और सोना बरसाने वाला |
छत्र लिया आप ने वरुण का |
वह श्रेष्ठ रथ प्रजापति का |
है आपके अब घर में खडा | (९७)
उत्क्रन्तिदा नामक शक्ति |
आपने मृत्यु से छीन ली | (९८)
वरुण का पाश और समुद्र से|
मिले रत्न जो अब निशुम्भ के ||
अग्नि ने वस्त्र दिए ऐसे |

जो आग में भी ना कभी जले | (९९)
हे दैत्यराज इस प्रकार सभी|
रत्न आपके पास हैं ही ||
स्त्रियों में रत्न यह कल्याणी|
को लीजिए अपने वश में भी ||" (१००)
आगे बोले मेधास मुनि |
ध्यान से राजा ने भी सुनी || (१०१)
चण्ड-मुण्ड की बात सुनके |
दैत्य सुग्रीव को बुलाया शुम्भ ने ||
और उसको दूत बनाया |
देवी के पास जाने को कहा || (१०२)
उससे कहा "मेरी आज्ञा से|
तुम जाना उसके सामने ||
ये-ये बातें तुम कहना |
ऐसे तुम उपाय करना ||
जिससे प्रसन्न वो हो जाये ||
शीघ्र ही यहाँ आ जाये ||" (१०३)
तदनुसार दूत चल दिये |
पर्वत प्रदेश के लिये |
अति सुन्दर वो प्रदेश था |
जहाँ देवी का निवास था ||
वहाँ पहुँचकर दूत बोला |
मीठी-मीठी वाणी में वह बोला || (१०४, १०५)

"देवि! शुम्भ हैं दैत्यराज |
त्रिलोकी स्वामी हैं वो आज ||
मैं उन्हीं का भेजा हुआ |
दूत तुम्हारे पास आया || (१०६)
उनकी आज्ञा सब देवता |
एक स्वर से मानते सदा ||
कोई उल्लंघन ना करे |
उनसे सब देव पराजित हुए ||
उन्होंने तुम्हे यह संदेश दिया |
ध्यान पूर्वक सुनो उसे ज़रा || (१०७)
"सम्पूर्ण जगत मेरे अधिकार में |
देव सब मेरे आज्ञा से चलें ||
पृथक पृथक करके यज्ञों का |
भाग भी मैं ही भोगता ||
तीन लोकों में श्रेष्ठ रत्न सब |
मेरे अधिकार मे हैं अब ||
ऐरावत वाहन इन्द्र का |
हाथी-रत्न मैं ने छीन लिया || (१०८,१०९)
क्षीरसागर मंथन से जो |
अश्व रत्न मिला था वो ||
उचचै:श्रवा है नाम जिसका |
देवों ने मुझे समर्पित किया || (११०)
इसके सिवा ओ सुन्दरी |

जो रत्न थे देवों के और भी ||
और नागों के, गंधर्वों के |
मेरे पास ही आये सब वे || (१११)
देवी हम लोग तुमको भी |
स्त्री रत्न मानें संसार की ||
सो आओ तुम पास अभी |
रत्न उपभोग करते हम ही || (११२)
हे चञ्चल नेत्रों वाली |
पास आके करो सेवा मेरी ||
या मेरे भाई निशुम्भ की |
हो तुम तो रत्नस्वरूपा ही || (११३)
हमारी होकर रहने से |
तुम्हे महान ऐश्वर्य मिलेंगे |
अपनी बुद्धि से विचार करो |
मेरी पत्नी तुम बन जाओ ||" (११४)
फिर श्री मेधास मुनि बोले |
सुनो माँ ने क्या किया आगे || (११५)
कल्याणमयी दुर्गा देवी |
जो इस जगत को धारण करतीं ||
मन-ही-मन गम्भीर भाव से |
मुस्कुरायीं और बोलीं ऐसे || (११६)
देवी बोलीं "हे दूत तुमने |
सत्य ही कहा है हमसे ||

इस में तनिक भी मिथ्या नहीं |
कि शुम्भ त्रिलोक का स्वामी ||
निशुम्भ भी है वैसा ही |
महावीर महा पराक्रमी || (११७-११८)
लेकिन इस विषय में ही |
मैं एक प्रतिज्ञा कर चुकी ||
कैसे करूं उसको मैं झूठा |
प्रतिज्ञा जो मैंने कर रखा ||
सुनो प्रतिज्ञा मेरी अभी |
जो अल्प बुद्धि से कर बैठी || (११९)
"जो मुझे संग्राम में जीत लेगा |
जो अपना दर्प मुझ में खो देगा ||
जो मुझे सब में देखेगा |
वही मेरा स्वामी बनेगा ||" (१२०)
जब ऐसा है तो शुम्भ-निशुम्भ को |
तुम यहाँ आने को बोलो |
आके वो मुझे परास्त करके |
मेरे साथ विवाह कर लें ||" (१२१)
देवी की बातें सुनके |
दूत ने ये वचन कहे | (१२१)
"देवी तुम बहुत घमण्डी हो |
ऐसे तुम बातें ना करो |
तीन लोकों में कौन ऐसा |

शुम्भ-निशुम्भ के जैसा | (१२३)
अन्य दैत्यों के सामने भी |
ना देव ठहर सके देवी ||
फिर तुम हो स्त्री अकेली |
तुम कैसे ठहर पाओगी || (१२४)
जब शुम्भ आदि दैत्यों के |
सामने देव न टिक पाये ||
तुम स्त्री होकर ओ देवी |
कैसे तुम लड़ने जाओगी ? (१२५)
इसलिए बात मानो मेरी |
चली चलो तुम उनके पास ही ||
देवी ऐसे करने से तेरा |
सुरक्षित गौरव सदा रहेगा ||
नहीं तो केश पकड़के वे |
ले जायेंगे तुम्हे खींचके ||" (१२६)
यह सुनके बोलीं देवी |
"तुम्हारा कहना ठीक ही ||
शुम्भ बलवान है निशुम्भ भी |
दोनों बड़े वीर पराक्रमी ||
किन्तु मैं क्या करूं अभी |
जो बिन सोचे प्रतिज्ञा ले ली ?
इसलिये तुम जाओ अभी |
जो मैंने तुम से है कही |

वो दैत्य राज को कहना |
आदर से सब समझाना ||
फिर वो जो उचित समझेंगे |
वो ही दैत्यराज करेंगे ||" (१२७)
सत्य सनातनी माँ देवी |
स्वीकारो आप हमारी ||
सरल हिन्दी की यह कथा |
देवी-दूत-संवाद कथा ||
भक्ति दान दो शक्ति दो |
चरण में अपने माँ ले लो ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
"देवी-दूत-संवाद" नामक पाँचवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ६

इस अध्याय में शुम्भ, धूम्रलोचन नामक एक सेनापति को दुर्गा देवी को पकड़ने के लिऐ भेजता है | धूम्र का अर्थ है धुंआ और धूम्रलोचन का अर्थ हुआ - वह व्यक्ति जिसकी आँखें धुएँ से भरी हैं | जिसको सब कुछ धुंधला दिखता है | इसका सूक्ष्म अर्थ है कि ऐसा व्यक्ति संसार को स्वार्थ भरी नज़र से देखता है |

देवी माँ ने "हुं" मन्त्र का उच्चारण किया जिससे उस धूम्रमयी दृष्टि का नाश हो गया | मन्त्र "हुं" में "ह" रूद्र के लिए है, "उ" स्थिति के लिए और "म्" पूर्णता के लिए | इस प्रकार इस शब्द का अर्थ है - जब हम संसार को पूर्णज्ञता से देखते है, एक रूप में पाते हैं | माँ का सन्देश है कि संसार को समग्र रूप में समता संग देखो तथा अपनी दृष्टि से स्वार्थ के दोष को नाश करो और अपने जीवन से धूम्रलोचन को समाप्त करो |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ६

ध्यान

जो सर्वज्ञेश्वर भैरव के अङ्क में निवास करतीं ।
उन परमोत्कृष्ट पद्मावती का चिन्तन करते अभी ॥
वे देवी बैठीं हैं नागराज के आसन पे ।
सर्प-फणों की मणियों की माला पहने ॥
देह लता उनकी अति-उद्भासित लगे ।
सूर्य समान तेज, तीन नेत्र शोभा बढायें ॥
हाथों में वे माला, कुम्भ, कपाल, कमल रखतीं ।
मस्तक पे अर्धचन्द्र-मुकुट धारण करतीं ॥

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ६

अद्भुत लीला देवी की, सुन्दर माँ सनातनी,
आओ, आओ, सुनो, सुनो, ऋषि ने कहा ||
(१)

देवी के वचन सुनके, दूत क्रोध से भरे,
दैत्यराज शुम्भ के पास गया ||
एक-एक करके हर बात, बड़ी विस्तार के साथ,
दैत्यराज को वह बता गया || (२)

दूत के वचन सुनके, कुपित वो हो उठे,
दैत्य सेनापति को बुला लाया ||
दैत्य सेनापति वो, महापराक्रमी जो,
धूम्रलोचन था नाम जिसका || (३)

"हे धूम्रलोचन अभी, सेना के साथ तुम भी,
जाके उस दुष्टा को ले आना ||
केश उसका पकड़के, बाल उसके घसीटके,
रक्षकों को मार के, ले आना ||"
(४) & (५)

ऋषि कहते हैं आगे, शुम्भ की बात सुनके,
धूम्रलोचन जल्दी चला गया ||
(६) & (७)
साठ हज़ार असुर ले के, हिमालय के पास जा के,
देवी को देख ललकारते बोला ||

“अरी तू अभी चल, शुम्भ-निशुम्भ के पास चल,
और अगर तूने ना चल दिया ||
तो जटा से पकड़कर, बल से घसीटकर,
मैं ही तुझे ले चलूँगा ||”
(८) & (९)
देवी बोलीं दैत्य से, “तुम को भेजा राजा ने,
तुम्हारी भी बहुत बड़ी है वीरता ||
और संग सेना भी, ऐसे में मुझे यदि
ले जाओ तो मैं कर, पाऊँगी क्या?" (११)

आगे की भी यह कथा, देवी की अनुपम कथा,
ऋषि बोले सुनो-सुनो राजा || (१२)

देवी की यह बात सुनके, धूम्रलोचन ओर उनके,
जल्दी-जल्दी क्रोध से दौड़ा आया ||
अम्बिका ने "हुँ" मंत्र के, उच्चारण मात्र से,
उसे उसी वक्त भस्म कर दिया || (१३)

फिर क्रोध में भरी, विशाल सेना दैत्यों की,
ने देवी के साथ भारी युद्ध की ||
तीखे सायकों की, शक्तियों और फरसों की,
और भी अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा हुई || (१४)

उसी समय देवी वाहन, सिंह ने की घोर गर्जन,
और असुर सेना पर टूट पड़ा || (१५)
किसीको पंजा मारके, किसी को चबाके,
कितनों को चपट ओष्ठों से मार डाला ||
(१६)
सिंह ने अपने नखों से, कितनों के पेट फाड़ डाले
थप्पड़ से मस्तक घड़ से अलग किया ||
(१७)
बहुत असुरों के उसने, हाथ-सर छिन्न-भिन्न किये,
और छाती फाड़-फाड़कर रुधिर पिया ||
(१८)
अत्यंत क्रोध में भरे, देवी वाहन सिंह ने,
क्षण में ही सारी सेना संहार किया ||
सिंह धर्म का ज्योत है, संहार उस से होता है
हम सब के अन्दर के दुरविचारों का ||
(१९)
शुम्भ ने जब यह सुना, देवी ने नायक मारा,
और सिंह ने सेना सब नष्ट कर दी || (२०)

बहुत क्रोध उसको हुआ, ओठ काँपने लगा,
चण्ड-मुण्ड को उसने आज्ञा दी ॥ (२१)

“हे चण्ड-मुण्ड अभी, लेके तुम सेना बड़ी,
वहाँ जाके उस देवी को ले आओ ॥ (२२)

जटाओं से उसे पकड़कर, या उसे तुम बाँधकर,
शीघ्र तुम उसको यहाँ ले आओ ॥
अगर लाने में संदेह हो, तो युद्ध में तुम उसको,
अस्त्र-सेना से घायल कर दो ॥ (२३)

घायल करके दुष्टा को, और वाहन सिंह को,
अम्बिका को यहाँ शीघ्र ले आओ ॥”
(२४)

धूम्रलोचन-वध कथा, माँ तुमने है सुनी,
प्यारी प्यारी सत्य सनातनी ॥
इस कथा से भी, और हम सब से भी,
सदा रहो प्रसन्न महा देवी ॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“धूम्रलोचन-वध” नामक छठा अध्याय पूरा हुआ ॥

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ७

इस अध्याय में असुर सेनापति चण्ड और मुण्ड हैं | चण्ड "क्रोध" का और मुण्ड "कामना" का प्रतीक है | चामुण्डा देवी "क्रोध" और "कामना" का नाश करने वाली हैं | "चा" का अर्थ है "चलने वाला"| "मुण्ड" माने वो सर है जो सभी ज्ञान योग्य बातों या वास्तविकता का प्रमुख है | इस प्रकार वास्तविकता में विचरण करने वाली ही चामुण्डा हैं |

इस अध्याय में माँ काली असुरों का भक्षण करती हैं जो वास्तव में हमारे नकारात्मक विचार हैं | माँ का हम पर इतना स्नेह है कि वह हमारे सभी नकारात्मक विचारों को दूर करती हैं | वे स्वयं ही उन्हें आक्रमण कर, तोड़कर, मार के भक्षण करना चाहती हैं | इस अध्याय में हम सीखते हैं कि हमें अगर अपने बुरे विचारों, क्रोध, अपकारी कामनाओं से बचना है तो उन्हें माँ को समर्पण करना चाहिए | ऐसा करते ही हम माँ के स्नेह की मधुरता का अनुभव करते हैं|

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय ७

ध्यान

रत्नमय सिंहासन पर बैठी,तोते का मधुर शब्द जो सुनतीं |
श्याम वर्ण शरीर पर जिनकी,
है लाल रंग की चोली और साड़ी ||
हाथ में शङ्ख का पात्र लिये, एक पैर कमल पर रखे हुए |
मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करतीं, पुष्पमाला पहने वीणा बजातीं ||
ललाट में जिनकी शोभा दे बिन्दी, मुख से जिनकी आ रही सुगन्ध मस्ती की |
उन मातङ्गी देवी का ही, मैं सदा ही ध्यान कर रही ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ७

ऋषि कहने लगे आगे कथा |
चण्ड-मुण्ड के वध की कथा || (१)
शुम्भ की आज्ञा पाके वे दो |
अस्त्र-शस्त्र सेना ले चले वो || (२)
वहाँ जहाँ देवी अब बैठी थीं |
हिमालय के शिखर पे ही ||
सिंह पर बैठी देवी देखा |
मंद-मंद मुस्काते देखा || (३)
उन्हें देखके कुछ दैत्यों ने |
धनुष ली और माँ पास चले ||
कोई माँ को थामना चाहे |
तो कोई तलवार संभाले || (४)
अम्बिका ने तब क्रोध किया |
उससे माँ वर्ण श्याम हुआ || (५)
कोप से उनकी भृकुटी तनी |
कराल मुख वो काली हो गयीं || (६)
काली ने हाथ तलवार पाश ली |
विचित्र खट्वाङ्ग धारण की ||
चीते-चर्मकी साड़ी पहनी थीं |
नर मुण्ड माला से सजी थीं ||

उनके शरीरका मांस सूखा था |
केवल हड्डियों का ढाँचा था || (७)
विशाल मुख जीभ लपलपाती |
देखने में खूब भयानक लगतीं ||
आँखें उनकी लाल भीतर धँसी |
और गर्जन हर दिशा गूँज रही || (८)
बड़े-बड़े दैत्य वध करती हुईं |
कालिका देवी सेना पर टूट पड़ीं ||
उन सब को वे भक्षण करतीं |
शीघ्र ही बड़ी सेना साफ़ कर दी || (९)
फिर पार्श्व रक्षकों को भी |
योद्धा और हाथियों को भी ||
जल्दी जल्दी हाथ में पकड़तीं |
गब-गब करके सब चबा लेतीं || (१०)
इसी प्रकार घोड़े, सारथी, रथी |
सैनिक को भी वो चबा लेतीं || (११)
किसीको पैरोंसे कुचल डालतीं |
किसीको धक्केसे ही मारतीं || (१२)
असुरों के अस्त्र मुँह से पकड़तीं |
रोष में सब दाँतसे पीस देतीं || (१३)
काली माँ ने सारी सेना मारी |
रौंद डाली, खा डाली, मार भगादी || (१४)
कोई तलवार से उतारे गये |

कोई कट्वाङ्ग से पीटे गये ||
बहुत उनके दाँतों के अग्रभाग की |
मार से हो गये धराशायी || (१५)
इस प्रकार सिर्फ क्षणभर में ही |
देवी ने मारी सेना सारी ||
यह देख चण्ड गया वहीँ |
जहाँ थी भयानक काली देवी || (१६)
मुण्ड ने बाणोंकी वर्षा से |
बार-बार चलाये हुए चक्रों से |
उन भयानक नेत्रोंवाली देवी को |
आच्छादित ही कर दिया तो || (१७)
अनेकों चक्र देवी के मुख में |
समाते हुए ऐसे जान पड़े ||
जैसे सूर्यबिम्ब बहुत सारे |
करें प्रवेश मेघ के उदर में || (१८)
तब घोर गर्जन वाली काली |
ने रोष में विकट अट्टहास की ||
उनके भयानक मुख भीतर में |
उज्जवल दाँत दिखायी पड़ रहे || (१९)
चढ़ गयीं वे तब सिंह पे |
हाथ में चण्ड केश पकड़ के |
चौड़ी तलवार ले सिर काटा |
उसे धड से अलग कर डाला || (२०)

चण्ड़ को मरा देख मुण्ड़ भी |
आया दौड़ा देवी के ओर ही ||
देवी ने फिर रोष में उसे भी |
मार के सुलाया धरा पर ही || (२१)
महापराक्रमी दैत्यमरे गये |
और बाकी दैत्य भाग गये || (२२)
चण्ड-मुण्ड मस्तक हाथ में ले |
चण्डिका पास जाके काली ने | (२३)
अट्टहास करते कहा ये |
"देवी चण्ड-मुण्ड नाम इनके |
इन दो महा पशुओं के |
जिनका भेंट किया है तुम्हें ||
बाकी शुम्भ-निशुम्भ दैत्य रहे |
उनको आप स्वयं ही मारिये ||" (२४)
ऋषि आगे की कथा हैं कहते |
चण्ड-मुण्ड महादैत्यों को देख के |
कल्याण मयी चण्डी ने कही |
मधुर वाणी में वो देवी बोलीं || (२५,२६)
"चण्ड-मुण्ड को लेकर आईं |
मेरे सामने तुम ओ देवी आईं |
इस कारण "चामुण्डा" से ही |
संसार में तुम्हारी ख्याति होगी ||" (२७)

सरल हिन्दी में यह कथा |
चण्ड-मुण्ड वध की कथा ||

पेश अमृत पदों में माँ |
सत्य सनातनी प्यारी माँ ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“चण्ड-मुण्ड वध” नामक सातवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ८

इस अध्याय में हमारी रक्त बीज से मुलाकात होती है | रक्त अर्थात् कामना और बीज का अर्थ है उत्पत्ति का साधन | इस प्रकार रक्तबीज का अर्थ हुआ “कामना की उत्पत्ति” | रक्तबीज एक असुर है जिसे वरदान है कि जब भी उसके रक्त की एक बूँद धरा पर गिरेगी, उसी क्षण एक नया असुर पैदा हो जाएगा और उसमें उतनी ही शक्ति और सामर्थ्य होगी जितनी पहले में | इस प्रकार हम जितना भी रक्त बीज को नष्ट करने का प्रयास करेंगे, उसे मार के और घायल कर के, उसकी उतनी ही रक्त की बूँदें धरती पर गिरेंगी और उतने ही नए रक्तबीज क्षणभर में पैदा हो जायेंगे | यह पृथ्वी रक्त्बीजों से भरती जाएगी |

इस उदाहरण से हमें कौन सा सूक्ष्म तत्व सीखने को मिलता है? जब तक हम इस मनुष्य जीवन में हैं हम इच्छापूर्ण वासनाओं से छुटकारा नहीं पा सकते | एक इच्छा के बाद, दूसरी इच्छा जन्म लेती रहती है | रक्तबीज का

लाल लहू, नकारात्मक इच्छाओं को उभारता, और हमें संसार सागर में डुबाता रहता है | यहाँ प्रश्न उठता है कि ऎसी अवस्था में हमें क्या करना चाहिए? इस अध्याय में देखते हैं कि उचित यही है कि हमें ऐसी स्थिति में उन्हें काली माँ को समर्पित कर देना चाहिए |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय ८

ध्यान

ध्यान करें प्यारी माँ भवानी की |

सूक्ष्म शक्ति की किरणों से जो घेरी हुईं ||

सिद्धिदात्री माँ अरुण वर्ण वाली |

नेत्रों में उनके करुणा लहरा रही ||

हाथों में पाश और अङ्कुश माँ रखतीं |

बाण और धनुष भी माँ धारण करतीं ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ८

आगे की कहानी ऋषि कहने लगे |
चण्ड मुण्ड मर जाने के आगे || (१)
चण्ड मुण्ड काली माँ ने मार दिया |
अगणित सेना भी नष्ट कर दिया || (२)
यह जान असुर राज क्रोधित हुआ |
उसने दैत्य सेना को आज्ञा दिया || (३)
"अपनी सब सेना के साथ आज ही |
उदायुध-कुल दैत्य छियासी ||
और कुम्बु-कुल दैत्य चौरासी |
जाएँ युद्ध में सेना लेके अपनी || (४)
पचास कोटीवीर्य सौ धौम्र कुल के |
सेनापति जायें मेरी आज्ञा से || (५)
कालक और दौर्हृद असुर भी |
मौर्य कालकेय असुर भी ||
युद्ध के लिये मेरी आज्ञा से |
तुरंत सब ही प्रस्थान करें ||" (६)
सेना नायक ये दैत्यों के |
हैं दुर-चिन्तन हमारे ||
उदायुध शान्ति को लूटे |
तो धौम्र कुल पाप करवाए ||

कालकेय झूटा भय जगाये |
तो कालक दुर्दिन याद दिलाए ||
इस प्रकार देकर सब को आज्ञा |
असुरराज शुम्भ खुद आगे बढ़ा ||
हज़ारों वीर सैनिकों का सेना |
से घिरा हुआ युद्ध को निकला || (७)
जब अत्यंत भयंकर सेना देखी |
चण्डिका ने धनुष टंकार की ||
जो भू और आकाश के बीचका |
भाग में पूरा ही गूंज उठा || (८)
हे राजन! देवीके सिंह ने भी |
ज़ोर-ज़ोर से भीषण गर्जन की ||
अम्बिका ने फिर घण्टा बजाया |
जिससे नाद और भी बढ़ गया || (९)
टंकार धनुष की व दहाड़ सिंह की |
घण्टेकी ध्वनी भी गूँज उठी ||
और भयंकर नाद इन से भी |
विकराल मुख खोल काली ने की || (१०)
शब्दों को सुन कुपित दैत्य सेना |
ने अम्बिका सिंह काली को घेरा || (११)
उसी समय हे राजन सुनिये |
असुर-नाश देव-मंगल के लिये || (१२)
अत्यंत वीर बल से युक्त थीं जो |

त्रिमूर्ति व देव शक्तियाँ वो ||
तब देव-शरीर से ही निकलीं |
वही रूप ले चण्डी के पास गईं || (१३)
जिस देवता का जैसा रूप था |
जैसा वेश-भूषा, जैसा वाहन था ||
उसी प्रकार उनकी शक्ति आई |
असुरों से युद्ध करने वो आईं || (१४)
पहले आई हंस विमान पर बैठी |
अक्षसूत्र कमण्डल शोभित शक्ति ||
ब्रह्मदेव की शक्ति इनको कहते |
ब्रह्माणी नाम से इन्हें जानते || (१५)
महादेव की शक्ति माँ माहेश्वरी |
वृषभ पर बैठीं त्रिशूल धारिणी ||
महानाग का कङ्कण पहने |
मस्तक में चंद्र विभूषित किये || (१६)
मयूर वाहन हाथ में शक्ति लाईं |
कार्तिकेय शक्ति कौमारी आईं || (१७)
ऐसे ही विष्णु शक्ति वैष्णवी |
गरुड़ पर सवार वहाँ आयीं ||
शङ्ख चक्र गदा खड्ग रखा |
शार्ङ्ग धनुष भी उनका था || (१८)
यज्ञ वाराह रूप अतुल्य लेके |
श्री हरि शक्ति आईं वाराही बनके || (१९)

नृसिंह के समान रूप ले के |
आईं नारसिंही शक्ति वहाँ पे || (२०)
इसी प्रकार आयीं इन्द्र शक्ति |
वज्र संग ऐरावत पर बैठीं ||
सहस्र नेत्र थे माँ इन्द्राणी के |
उनका भी रूप था इन्द्र जैसे || (२१)
इस प्रकार देव शक्तियों से |
घिरे हुए चण्डिका देवी से ||
महादेव ने कहा "आप शीघ्र ही |
मेरी प्रसन्नता के लिये ही || (२२)
कर दो असुरों का आप संहार |"
तभी देवी शरीर से हुआ प्रादुर्भाव |
एक अत्यंत भयानक शक्ति का |
परम-उग्र चण्डिका शक्ति का ||
जो सैंकडों गीदड़ियों की |
भाँति आवाज़ करने वाली थीं || (२३)
उस अपराजिता देवी ने |
धूमिल जटावाले महादेव से |
कहा "प्रभु शुम्भ-निशुम्भ के |
पास जाइए आप दूत बनके || (२४)
और उन गर्व भरे दैत्यों से |
और बाकी दानवों से कहिए || (२५)
"दैत्यों! यदि तुम चाहो जीवित रहना |

तब पाताल को तुम लौट जाना ||
इन्द्र को त्रिलोकी राज्य मिले |
देव यज्ञभाग उपभोग करें || (२६)
पर अपने बल अभिमान से यदि |
तुम्हे चाहत है युद्ध करने की ||
तो आओ ये योगिनियाँ मेरी |
मांस खा तुम्हारी तृप्त होंगी ||"" (२७)
देवी ने शिव शंकर ही को |
बनाके दूत भेज दिया तो ||
"शिवदूती" नाम से ही |
विख्यात हो गयीं वे देवी || (२८)
वे महादैत्य ने भगवान शिव के |
मुँह से जब सुने वचन देवी के ||
क्रोध में तमतमा हो उठे |
और उस स्थान पर जा पहुँचे ||
जहाँ थीं माँ देवी कात्यायनी |
वहाँ दैत्य ने पास पहुँचते ही || (२९)
बाण-शक्ति और ऋष्टि आदि |
अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा की || (३०)
तब देवी ने भी खेल-खेल में ही |
धनुष की जोर से टंकार की ||
और अपने बड़े-बड़े बाण |
से दैत्यों के चलाए हुए बाण ||

शूल, शक्ति, फरसों को काटा |
फिर आगे आईं उनके काली माता || (३१)
शूल के प्रहार से शत्रु को चीरा |
खट्वङ्ग से उनको कुचल दिया || (३२)
ब्रह्माणी जिस-जिस ओर दौडतीं |
वहाँ कमण्डलु जल डालतीं ||
इससे शत्रु ओज-पराक्रम को |
पूरा नष्ट ही कर देतीं वो || (३३)
एक ओर त्रिशूल से महेश्वरी |
तो कहीं और चक्रधारी वैष्णवी ||
अत्यंत क्रोध भरी कौमारी |
शक्ति से दैत्य-संहार करतीं || (३४)
इन्द्र शक्ति के वज्रप्रहार से |
विदीर्ण सैंकडों शत्रु हो गये ||
रक्त की धारा बहाते हुए |
पृथ्वी पर वे सब सो गये | (३५)
वाराही ने तुण्ड प्रहार से |
और दढोंके उग्रभाग से |
और चक्र की चोट से भी |
कितने-कितने दैत्यों को मार दी || (३६)
नारसिंही मार के खातीं |
महादैत्यों को नखों से ही ||
करते हुए सिंह नाद वे |

विचरतीं रण भूमि में ॥ (३७)
भय पाके देवी शिवदूती के ।
भीषण प्रचण्ड अट्टहास से ।
कितने ही दैत्य पृथ्वी पे ।
गिरे व देवी के ग्रास बने ॥ (३८)
मातृगण सब क्रोध में भरे ।
नाना प्रकार के उपायों से ।
बड़े-बड़े असुर संहार करते ।
और दैत्य सैनिक भगाते ॥ (३९)
क्रोध भरे तब युद्ध में आया ।
रक्त बीज महादैत्य आया ॥ (४०)
उसके शरीर से रक्त की ।
जब बूंद पृथ्वी पे गिरती ॥
तब उसी के समान ही ।
पैदा होता उसी क्षण ही ॥
एक दूसरा दैत्य वैसे ही ।
पराक्रमी शक्तिशाली ॥ (४१)
रक्तबीज है वास्तव में ।
कामनायें मन के अपने ॥
देखा होगा तो तुमने भी ।
पूर्ण एक इच्छा होते ही ॥
दूसरी मन दर्पण में आ जाती ।
मन को फिर अस्थिर कर देती ॥

रक्तबीज हाथों में लेके गदा |
इन्द्रशक्ति से लड़ने लगा ||
तब ऐन्द्री ने मारा उसे |
रक्तबीज को वज्र से || (४२)
घायल हुआ जब वो वज्रसे |
तब रक्त गिरा उसके शरीर से ||
उससे उसीके रूप-बल के |
बहुत सारे योद्धा बनने लगे || (४३)
उसके शरीर से रक्त की |
जितनी बूँदें नीचे टपकीं ||
उतने ही पुरुष उत्पन्न हुए |
वे रक्तबीज के समान ही थे ||
वे रक्तबीज की तरह वीर थे |
वैसे ही महान पराक्रमी थे || (४४)
रक्त से उत्पन्न हुए जो |
भयंकर अस्त्र-शस्त्र लेके वो ||
माताओं से युद्ध करने लगे |
तब पुन: वज्र के प्रहार से || (४५)
दैत्य मस्तक घायल हुआ |
तब बहुत रक्त बहने लगा ||
उससे फिर उत्पन्न हुए वैसे |
हजारों पुरुष रक्तबीज जैसे || (४६)

वैष्णवी के चक्र प्रहार से |
ऐन्द्री के गदा के मार से ||
चोट बहुत तब लगी उसको |
दैत्यसेनापति रक्तबीज को || (४७)
वैष्णवी के चक्र के मार से |
बहा जो रक्त उसके शरीर से |
उससे सहस्रों महा दैत्य बने |
जो रक्तबीज की तरह ही थे || (४८)
सारा संसार भर गया उनसे |
तभी कौमारी ने शक्ति से ||
वाराही ने तलवार से |
माहेश्वरी ने त्रिशूल से |
उस महादैत्य को आघात किया |
और वह क्रोध से भर गया || (४९)
उसने गदा से शक्तियाँ सभी |
पर पृथक-पृथक प्रहार की || (५०)
शक्ति शूल आदि से वो ही |
बार-बार घायल हुआ और तभी ||
उसके शरीर से बह निकली |
रक्त की बड़ी धारा जिस से ही ||
निश्चय सैकड़ों और भी |
असुर बने उस क्षण में ही || (५१)
उन्होंने जगत व्याप्त किया |

देख देवों को बड़ा भय हुआ ॥ (५२)
देवोंको ऐसे उदास देखते ही ।
चण्डिका ने बुलाया माँ काली ॥
"हे चामुण्डे ! तुम मुख अपना ।
फैलाओ अभी और भी जरा ॥ (५३)
मेरे शस्त्रपात के घावों से ।
गिरेंगी जो रक्तबिंदुयें ॥
और उत्पन्न होंगे उनसे जो ।
दैत्य खालो तुम उनको ॥ (५४)
ऐसे भक्षण करते उनका ।
रक्त से उत्पन्न दैत्यों का ।
तुम रण भूमि में विचरना ।
इस से ही उस दैत्य का ।
सारा रक्त क्षीण होगा ।
और वह भी खुद नष्ट होगा ॥ (५५)
उन भयंकर दैत्यों को ।
जब तुम खा जाओगी तो ॥
और नए दैत्य फिर दूसरे ।
उत्पन्न ना हो पायेंगे ॥" (५६)
माँ काली से यह कहके ।
चण्डी ने मारा दैत्य शूल से ॥
तब अपने मुख में ले ली ।
काली ने दैत्य रक्त सारी ।

तब रक्तबीज ने चण्डिका |
पर मारा गदा अपना || (५७)
लेकिन गदा के प्रहार का |
माँ पे कुछ भी असर न हुआ ||
घायल दैत्य के शरीर से |
रक्त की बूँदें गिरते रहे || (५८)
किन्तु जैसे ही रक्त गिरा |
चामुण्डा ने मुखमें ले लिया ||
रक्त गिरने से काली के |
मुख में जो दैत्य बन गए ||
उन्हें भी माँ ने खा लिया |
और रक्त सब खा-पी लिया || (५९)
तब मार डाला उसे देवी ने |
वज्र बाण खड्ग आदि से || (६०)
हे राजा ! शस्त्रों से मारा गया |
वो रक्तबीज पृथ्वी पर गिरा || (६१)
हे नृप ! तब देवों को मिली |
अनुपम हर्ष की प्राप्ति || (६२)
तब मातृगण ने रक्तपान की |
और मस्ती से नृत्य भी की || (६३)
सरल हिन्दी की यह कथा |
रक्तबीज-वध की कथा ||

स्वीकारो सत्य सनातनी |
शुद्ध भक्ति वर दायिनी ||
हम कामनायें-रक्तबीज अपने |
दे पायें प्यारी काली माँ तुम्हे ||
ताकि श्री कमल चरणों में |
सदा के लिए हम रह पायें ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“रक्तबीज वध” नामक आठवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ९

शुम्भ का अर्थ है “दीप्तमान होना” और असुर शुम्भ स्व-अभिमान का सूचक है जबकि निशुम्भ का अर्थ है “अदिप्तिमान” अर्थात निशुम्भ “स्व:निंदा” का प्रतीक है | यह वह भावना है जब हम कहते है, “मैं बिलकुल काबिल नहीं हूँ | मेरे कार्य, मेरे व्यवहार अपर्याप्त हैं |” शुम्भ और निशुम्भ दोनों भाई हैं जो हमारे मन में अस्थिरता और असुंतलन पैदा करते हैं |

शुम्भ और निशुम्भ दोनों के पास अपनी ढाल है | निशुम्भ की ढाल में आठ चन्द्रमा हैं | चन्द्रमा भक्ति का प्रतीक है | इससे यह पता चालता है कि हमारे पास बहुत सारी भक्ति निशुम्भ अर्थात स्व:निंदा की ओर है | यदि कोई हमें प्रसन्न करने की कोशिश भी करे तब भी हम अपनी दयनीयता की स्थिति और स्व:निंदा के चिन्तनों से नही उठते |

अगले अध्याय में हम देखेंगे कि शुम्भ की ढाल में एक सौ चन्द्रमा हैं| यह प्रतीक है कि हमारी भक्ति शुम्भ के प्रति बहुत ही अधिक है | स्व-अभिमान के प्रति हमारी लगाव स्व: निंदा से ज़्यादा है |

अपनी युद्ध नीति में माँ निशुम्भ से मुकाबले का एक अद्भुत उपाय करती हैं | युद्ध प्रारम्भ होने से पहले ध्वनि-विज्ञान का प्रयोजन करती हैं | माँ अपना शंख द्वाहित करती हैं, धनुष की टंकार करती हैं और घण्टानाद करती हैं | यह सब शत्रु के मन में भय पैदा करता है| और उन्हें निस्तेज बना देता है |

इसी प्रकार हम भी अपने जीवन संघर्ष में माँ की शैली का प्रयोग कर सकते हैं | जब हम पूजा-पाठ से दिन का प्रारम्भ करते हैं, घण्टा बजाते हैं, मन्त्र उच्चारण करते हैं और शंख बजाते हैं | हमारी साधना की ध्वनि तथा कंपन हमारे नकारात्मक विचारों को नष्ट कर देती है और उन्हें निस्तेज बना देती है | जब साधन में सच्चाई और उत्सुकता बढ़ती है तब स्वत: ही हमारे नकारात्मक असुर अर्थात् विचार कमज़ोर और खण्डित हो जाते हैं |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय ९

ध्यान

जिनका वर्ण बन्धूक पुष्प के जैसे |
सुन्दर कंचन, रक्त-पीत मिश्रित वैसे ||
जो अपनी भुजाओं में पाश, अङ्कुश रखतीं |
सुन्दर अक्षमाला और वर मुद्रा धारण करतीं ||
जो हैं आभूषित अर्धचन्द्र से |
और हैं सुशोभित तीन नेत्रों से ||
उन अर्धनारीश्वर के श्रीविग्रह की |
निरन्तर ही मैं शरण लेती ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ९

कहते हैं ऋषि को सुराथ राजा |
सुनके देवी की यह अपूर्व कथा || (१)
"भगवन! आपने रक्तबीज के वध से |
जुड़ा देवी चरित्र बताया मुझे ||
इससे जानें हम इस महा देवी की |
चरित्र और महिमा अपार भी || (२)
रक्तबीज के मारे जाने पर क्रोध में |
क्या किया शुम्भ व निशुम्भ ने ? (३)
यह भी मुझे आप कृपा कर बताइये |"
ऋषि ने कहा फिर राजन सुनिए! (४)
जब रक्तबीज और सेना संहार हुई |
उनके क्रोध की सीमा ही न रही || (५)
विशाल सेना को देख मारी गयी |
क्रोधित निशुम्भ भागा माँ के ओर ही ||
उसके साथ थी असुरों की प्रधान सेना |
आगे-पीछे अगल-बगल शूरवीर सेना || (६)
वीर दैत्य चले मारे क्रोध से भरे |
ओंठ अपने चबाते देवी को मारने || (७)
महा पराक्रमी शुम्भ भी साथ सेना के |
आया युद्ध करने मातृगणों से ||

चण्डिका को मारने के लिए आया |
घोर संग्राम उनका माँ संग छिड़ गया || (८)
उन दोनों दैत्यों ने मेघों की भाँति |
बाणों की भयंकर वृष्टि कर डाली || (९)
चलाये जो बाणों को उन दैत्यों ने |
काट दी तुरन्त ही माँ चण्डिका ने || (१०)
अस्त्र-वर्षा से दैत्यों को चोट पहुँची |
निशुम्भ ने तलवार सिंह शीश पे मारी || (११)
जब देखा अपने वाहन को चोट आया |
तब देवी ने क्षुरप्र नामक बाण लिया ||
उससे निशुम्भ की तलवार काट डाली |
अष्ट चंद्र ढाल को पूरी तोड़ डाली || (१२)
कटी ढाल तो उसने चलायी शक्ति |
उसकी माँ ने चक्र से दो भाग कर दी || (१३)
अब तो निशुम्भ क्रोध में जल भर गया |
देवी की ओर उसने एक शूल फेंका ||
किन्तु जब वो शूल माँ के पास गया |
उसे मुक्के से ही माँ ने चूर्ण किया || (१४)
तब दैत्य ने चण्डी पर गदा चलाया |
उसे त्रिशूल से माँ ने भस्म किया || (१५)
फिर दैत्यराज निशुम्भ परशु लाया |
धराशायी उसे बाणों से माँ ने किया || (१६)

अपने महा पराक्रमी भाई निशुम्भ को |
धरती पे गिरे हुए शुम्भ ने देखा तो ||
बड़े क्रोध में आके आगे वह बढ़ा |
अम्बिका का वध करने के लिए गया || (१७)
रथ पर बैठे उत्तम आयुधों से |
बड़ी-बड़ी आठ अनुपम भुजाओं से ||
सुशोभित हुआ वह मालुम ऐसे पड़ा |
जैसे उसने सब नभमण्डल घेर लिया || (१८)
उसको देख माँ ने शंखध्वनी किया |
धनुष का दुष्कर टंकार भी किया ||
घण्टा-शब्द से व्याप्त किया हर दिशा |
उससे दैत्य तेज सब नष्ट हो गया || (१९)
फिर सिंह ने ऐसे भयंकर दहाड़ की |
जिससे घमण्ड टूटे गजराज की भी ||
दशों दिशाओं में दहाड़ वह गूँजा |
पृथ्वी को भरके नभ में भी गूँजा || (२०)
फिर काली आकाश में उछल के कूदीं | (२१)
आके भू पे हाथ ज़ोर से पटका दीं ||
उससे भयंकर शब्द हुआ ऐसे |
कि पूर्व के शब्द शान्त हो गये || (२२)
फिर शिवदूती ने की अट्टहास ध्वनि |
दैत्य थर्रा गये सुन वह घोर ध्वनि ||

शुम्भ किन्तु तिलमिला उठा क्रोध से |
तब उसे ललकार के माँ अम्बिका ने || (२३)

"हे दुरात्मन खड़ा रह! खड़ा रह!" कहा |
नभ से देवों ने "जय! जय! जय!" कहा || (२४)

शुम्भ ने चलाया ज्वाला सहित शक्ति |
अग्निमय पर्वत के समान वह शक्ति ||

देवी ने भारी लूकेसे उसे दूर की |
सिंहनाद से त्रिलोकी शुम्भ ने भर दी || (२५)

वज्र पात के समान और घोर शब्द हुआ |
जिसने अन्य सब शब्दों को जीत लिया || (२६)

शुम्भ के चलाए हुए बाणों को देवी ने |
देवी के चलाए हुए बाणों को शुम्भ ने ||

अपने-अपने बाणों के साथ टुकड़े कर दिये |
और सैकड़ों टुकड़े-टुकड़े बाण हो गये || (२७)

तब क्रोध में भरी चण्डिका ने शूल मारा |
जिसेके चोट से अचेत हो के वह गिर पड़ा | (२८)

इतने में निशुम्भ को होश आ गया |
बाणों से देवी-काली-सिंह का पीछा किया || (२९)

माया से उसने दस हज़ार बाँहें बना लीं |
चक्रयुद्ध से चण्डी को दैत्य ने ढक ली || (३०)

तब दुर्गम पीड़ा नाशिनी दुर्गा देवी ने |
उन चक्रों व बाणों को काटा बाणों से || (३१)

इसको देख निशुम्भ सेना सहित दौड़ा |
चण्डिका का वध करने हाथों में ले गदा || (३२)
उसके आते चण्डिका ने तलवार से उसकी |
गदा शीघ्र काटी तब उसने शूल ले ली || (३३)
देवों को पीड़ा देने वाले निशुम्भ को |
शूल हाथ में लिये आता देखा तो ||
चण्डिका ने वेग से शूल अपना चलाया |
उसकी छाती में उससे छेद कर दिया || (३४)
शूल लगते ही छाती से एक दूसरा |
महाबली पराक्रमी पुरुष आ निकला ||
"खड़ी रह ! खड़ी रह !" कहते हुए आया |
माँ ने सुना और अट्टहास हँस दिया || (३५)
खड्ग से उन्होंने उसका मस्तक काटा |
और वो तब पृथ्वी पर ही गिर पड़ा || (३६)
सिंह अपने मज़बूत दाँतों से असुरों की |
गर्दन कुचलकर करने लगा भक्षण ही ||
यह बड़ा भयंकर दृश्य था और साथ ही |
काली शिवदूती ने दैत्यों की भक्षण की || (३७)
कौमारी की शक्ति से असुर बड़े नष्ट हुए|
ब्रह्माणी के मन्त्र-जल से वे निस्तेज भागे|| (३८)
माहेश्वरी के त्रिशूल आघात से गिर पड़े |
वाराही के दाँत से चूर-चूर हो गये || (३९)

वैष्णवी ने चक्र से टुकड़े उनके किये |
ऐन्द्री वज्र से प्राणों को हाथ से धो बैठे || (४०)

कुछ असुर नष्ट हुए तो कुछ भाग गये |
बहुत काली शिवदूती व सिंह के ग्रास बने || (४१)

सरल हिन्दी में निशुम्भ वध की कथा |
स्वीकारो सत्य-सनातनी माँ कृपया ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“निशुम्भ वध” नामक नवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १०

दसवें अध्याय में, चण्डी माँ देवताओं की ओर से "स्व-अभिमान" से लडती दिखाई देती हैं | हम भी स्व-अभिमान का शिकार होते जब हम सोचेते, "वाह! मैंने क्या अच्छा काम किया है, देखो मेरी सफलता को! मैं अपनी प्रशंसा करता हूँ | और विश्वास है कि दूसरे भी मेरी प्रशंसा करेंगे|" शुम्भ और निशुम्भ इस बात में समान हैं कि दोनों ही हमें असंतुलित कर देते हैं | हमारा ध्यान अधिक विस्तृत नहीं होता | वह हमारे अपने ऊपर ही केंद्रित रहता है - हमारी अपनी सफलता हो या अपनी असफलता | दोनों ही परिस्थितियों में ना ही हम शान्ति से रह सकते हैं और ना ही भगवान व संसार के प्रेम में लीन हो सकते हैं |

अध्याय के प्रारम्भ में ही हम देखते हैं कि शुम्भ को विचार आता है कि यदि माँ अपने प्रादुर्भाव को समाप्त कर लें तो वह उन्हें परास्त कर सकेगा | जब माँ अपने सभी रूपों को समाप्त करती हैं तो केवल शुम्भ और माँ का दैवीय रूप रह जाता है | यह स्थिति सविकल्प समाधि कहलाती है |

परन्तु माँ किसी प्रकार की द्विविधता पसंद नही करतीं | माँ चाहती हैं कि हम अहंकार को त्यागें और संसार की सारी शक्तियों का समावेश उन के अन्दर देखें और इस प्रकार निर्विकल्प समाधि की स्थिति में आ जाऐं |

चण्डी माँ ने शुम्भ को समर्पण करने के कई अवसर दीये परन्तु उसने नही स्वीकारा और युद्ध करने का हठ नहीं छोड़ा | अन्त में माँ ने लोक-कल्याण के लिए उस का वध कर डाला | इसी प्रकार जब तक हम यह अनुभूति नहीं करें कि संसार माँ का ही रूप है, हम भी उनके ही अंश हैं और माँ को पूर्ण समर्पण न कर दें, हमें भी पूर्ण शान्ति नहीं मिलेगी |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय १०

ध्यान

जिनकी सुन्दरता तपाये हुए सुवर्ण सी |
जिनके तीन नेत्र सूर्य, चन्द्र और अग्नि भी ||
जो अपने मनोहर हाथों में धनुष-बाण लेतीं |
और अङ्कुश, पाश और शूल धारण करतीं ||
जो मस्तकपर अर्धचन्द्र धारण करतीं |
उन शिवशक्ति स्वरूपा भगवती कामेश्वरी |
का मैं पूर्ण हृदय से चिन्तन करती ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १०

ऋषि मेधा ने फिर कही ।
सुनो राजा आगे कहानी ॥ (१)
जब देखा प्राणों से प्यारे ।
भाई निशुम्भ को मरे ॥
सारी सेना का संहार देखा ।
तब क्रोध भरे शुम्भ ने कहा ॥ (२)
"दुष्ट दुर्गा ! तू निज बल की ।
झूठ-मूठ ही घमण्ड करती ॥
बनी हुई तू बड़ी मानिनी ।
पर दूसरों के बल से लड़ती ॥" (३)
शुम्भ को समझ दम्भ मन का ।
मिथ्याभिमान गुरूर अपना ॥
सुन के शुम्भ के वचन ये ।
देवी बोलीं तुरन्त उससे ॥ (४)
"हे दुष्ट इस संसार में पूरी ।
मैं ही हूँ एक अकेली ॥
मेरे सिवा दूसरा कौन है ?
देख, ये मेरी विभूतियाँ हैं ।
मुझमें ही ये सम रहीं ॥"
तब ब्रह्माणी आदि सब देवी । (५)

अम्बिका के शरीर में गयीं |
शेष फिर अम्बिका ही रहीं || (६)
अब आगे एक बात देवी |
शुम्भ असुर के साथ बोलीं || (७)
“अब तक विभूति बल से |
मैंने अनेक रूप लिए थे ||
अब सब रूप समेट मैं ही |
खड़ी हूँ युद्ध करने अकेली ||
अब स्थिर हो जाओ तुम भी ||”
आगे ऋषि ने यह बात कही || (८,९)
तदनन्तर शुम्भ और देवी |
दोनों में युद्ध छिड़ गयी ||
विस्मय भर दानव देवता |
ने भयानक संग्राम देखा || (१०)
बाण की वर्षा व बड़े तीखे |
अस्त्र-शस्त्र की प्रहार के ||
इस से सब को युद्ध बड़ा |
घोर और भयानक लगा || (११)
उस समय माँ अम्बिका ने |
सैंकड़ों दिव्य अस्त्र छोड़े ||
उन्हें दैत्य राज शुम्भ ने |
बात ही बात में काट डाले || (१२)
इसी प्रकार शुम्भ ने जो भी |

दिव्य अस्त्रों की प्रहार की ||
उन्हें परमेश्वरी ने खेल में |
भयंकर हुंकार आदि से ||
एक एक कर जब नष्ट की |
तब असुर ने बाण वर्षा की || (१३)
यह देख क्रोध से भरी देवी |
ने बाण से धनुष काट दी || (१४)
धनुष कट गया तो दैत्य ने |
शक्ति ले लिया हाथों में ||
चक्रसे शत्रु हाथ शक्ति |
को देवी ने काट गिरा दी || (१५)
तत्पश्चात दैत्यों के स्वामी |
शुम्भ ने सौ चाँदवाली ||
ढाल तलवार हाथों में लिया |
उससे माँ पर धावा किया || (१६)
उसके आते ही चण्डिका ने |
अपने धनुष से बाण छोड़े ||
और सूर्य सम चमकीली ढाल |
काटी और साथ काटी तलवार || (१७)
फिर उस दैत्य के घोड़े |
और सारथी भी मारे गये ||
धनुष पहले ही कट गई |
कुपित हो उसने मुद्गर ली || (१८)

उसे आते देख माँ देवी ने |
काटी मुद्गर तेज़ बाणों से ||
तब वह बड़े वेग से मुक्का |
तानकर देवी की ओर झपटा || (१९)
समीप जाकर श्रेष्ठ दैत्य ने |
मुक्का मारा माँ की छाती में ||
तब उन देवी ने भी उसकी |
छाती में घूँसा जमा दी || (२०)
देवी का जब थप्पड़ खाया |
दैत्य राज शुम्भ गिर पड़ा ||
अल्प समय भी न हुआ |
वह उठकर खड़ा हो गया || (२१)
झपट माँ को वो ले गया |
वो ऊँचे आकाश में उड़ा ||
तब चण्डिका ने आकाश में ही |
निराधार शुम्भ से युद्ध की || (२२)
दैत्य और चण्डिका नभ में |
एक दूसरे से लड़ने लगे ||
यह दृश्य देख कर पहले |
सिद्ध मुनि पड़े विस्मय में || (२३)
फिर बड़ी देर तक देवी ने |
नभमण्डल में उस दैत्य से ||

युद्ध किया फिर उसे उठाया |
घुमा के पृथ्वी पर पटकाया || (२४)
पटका गया तो पृथ्वी आया |
पुन: दुष्टात्मा उठ गया ||
चण्डिका की ओर वह दौड़ा |
करने के लिये वध उनका || (२५)
जब समस्त दैत्यों के राजा |
शुम्भ को अपनी ओर आते देखा ||
तो देवी ने त्रिशूल से ही |
उसकी छाती छेदकर गिरा दी || (२६)
जब देवी के शूल की धार से |
घायल वो हुआ तब उसके ||
प्राण-पखेरू उड़ ही गये |
और भू-पर्वत सब हिल उठे ||
समुद्रों का भी काँपना हुआ |
और वह भूमि पर गिर पड़ा || (२७)
मारा गया वह दुरात्मा |
सुखी हुआ संसार सारा ||
सम्पूर्ण जग स्वस्थ हो गया |
नभ निर्मल दिखायी दिया || (२८)
पहले उत्पातसूचक मेघ थे |
जो उल्कापात होते थे ||
उस महा दुष्ट के मरने पे |

वे सब भी शान्त हो गये ||
नदियाँ भी ठीक मार्ग से |
अपनी राह पर लगीं बहने || (२९)
उस समय शुम्भ की मृत्यु से |
देवगण सब हर्ष से भरे ||
गद-गद सब देव हो ही गये |
गन्धर्व गीत मीठे गाने लगे |
सुन्दर बाजे बजने लगे |
लगीं अप्सराएँ नाचने ||
तब पवित्र वायु बहने लगी |
सूर्य की उत्तम प्रभा हो गयी || (३१)
अग्निशाला की बुझी हुई |
आग खुद प्रज्वलित हो उठी ||
"शान्ति-शान्ति" की ध्वनि |
हर दिशा में उच्चरित हुई ||
शान्ति प्रदायिनी माँ हमारी |
सत्य सनातनी प्यारी प्यारी ||
शुम्भ-वध की यह कहानी |
स्वीकारो माँ भक्ति दायिनी ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
"शुम्भ वध" नामक दसवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ११

इस अध्याय में हम बार-बार माँ नारायणी को नमस्कार करते हैं | नर अर्थात् मनुष्य, मनुष्यता | अयना अर्थात् आँखें | माँ तो मानवता की आँखें हैं | वह नारायण को शक्ति, ऊर्जा प्रदान करती हैं | वह ही शुद्ध चैतन्य को प्रकट करती हैं | हम पूरी चैतन्य ऊर्जा के साथ उन्हें नमन करते हैं |

इस अध्याय में कई अपूर्व श्लोक हैं जो विशेष लक्ष्य सिद्धि के लिए मन्त्र जाप में प्रयोग होते हैं | जैसे श्लोक २९ शरीर में रोग शान्ति के लिए जपा जाता है | संसार की सुख शान्ति के लिए हम श्लोक ३९ का जाप करते हैं, जिसमें हम माँ से प्रार्थना करते हैं कि वे तीनों लोकों अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण के दुःख हरें |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ११

ध्यान

श्री अङ्गों की आभा बाल सूर्य सी जिनकी |
मस्तक पर मुकुट-चंद्रमा धारण करी ||
वो ऊँचे स्तन वाली, युक्त तीन नेत्रों से |
वरद, अङ्कुश, पाश, अभय मुद्रा ली हाथों में ||
जिनके मुख पर मन्द-मन्द मुस्कान छायी रहती |
उन भुवनेश्वरी देवी का ध्यान मैं करती ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय ११

ऋषि अब कहने लगे | कहानी आगे बताने लगे || (१)

देवी के द्वारा शुम्भ के | वहीं पर मारे जाने पे |
इन्द्र आदि देवों ने | अग्नि को आगे करके ||
कात्यायनी देवी की | बहुत प्यारी स्तुति की ||
तब अभीष्ट की प्राप्ति से | मुख कमल दमक उठे ||
उनके प्रकाश से ही | दिशाएँ जग मगा उठीं || (२)

देवता बोले देवी को | माँ हम से तुम प्रसन्न रहो ||
शरणागत की पीड़ा को | दूर करतीं माँ तुम्ही तो ||
माता पूरी जगत की | रक्षा करो विश्वेश्वरी | (३)

इस चराचर जगत की | देवी तुम्ही अधीश्वरी ||
जगत आधार भी | एकमात्र माँ तुम ही ||
पृथ्वी रूप धारण करतीं | उसमें सबको संभालतीं ||
अलङ्गनीय है देवी | पराक्रम यह तुम्हारी ||
तुम्हीं जलरूप भी लेतीं | और जगत को तृप्त करतीं ||
(४)

वैष्णवी शक्ति तुम्हीं माँ | अनन्त बल सम्पन्न माँ ||
विश्व की कारणभूता | आप ही परमा माया ||
तुम्ही समस्त विश्व को | मोहित कर रख देती हो ||

तुम्ही प्रसन्न होके भी | माँ मोक्ष की प्राप्ति देतीं || (५)

जो भी विद्याएँ हैं वो | आपके भिन्न स्वरूप हैं वो ||
जगत में जो भी स्त्रियाँ हैं | वे आप ही की मूर्तियाँ हैं ||
एकमात्र आपने ही तो | व्याप्त किया है इस जगको ||
आपकी स्तुति क्या करें ? आप तो स्तुति से हो परे ||
स्तुति की परमशक्ति माँ | आप हो परा वाणी माँ ||
(६)

सर्वस्वरूपा देवी माँ | स्वर्ग और मोक्ष देतीं माँ |
जब हुई ऐसी स्तुति आपकी | और क्या हो सकती ?
(७)

बुद्धि रूप ले देवी माँ | जीव हृदय में बसतीं माँ ||
स्वर्ग मुक्ति प्रदायिनी माँ | नमो नमो नारायणी माँ |
(८)

कला काष्ठा रूपिणी माँ | तुम परिणाम प्रदायिनी माँ ||
विश्व विनाशिनी शक्ति माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||
(९)

सब मंगल प्रदायिनी माँ | कल्याणदायिनी शिवा माँ ||
विश्व विनाशिनी शक्ति माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||
(१०)

सृष्टि, स्थिति विनाश शक्ति | गुना आश्रय सनातनी ||
सर्वगुणमयी आप ही माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||
(११)

शरण में आये दीनों की | और पीड़ितों की रक्षिणी ||
सबकी पीड़ा मिटातीं माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१२)

हंस युक्त विमान में माँ | ब्रह्माणी रूप में आप माँ ||
कमण्डलु जल छिटकतीं माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१३)

त्रिशूल चाँद सर्प धारिणी | माहेश्वरी स्वरूपिणी ||
महावृषभ पर बैठीं माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१४)

मयूर, मृग से घिरी रहतीं | महाशक्ति धारिणी ||
निष्पापे कौमारी माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१५)

शङ्ख, चक्र गदा, शार्ङ्ग ली | उत्तम आयुध धारण की ||
वैष्णवी शक्ति रूपा माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१६)

हाथ में महाचक्र लिये | दाँतों से भू उठाये ||
कल्याणमयी वाराही माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१७)

उग्र नृसिंह का रूप लिया | दैत्यों का वध किया ||
सदा त्रिलोक की रक्षिणी माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१८)

मस्तक पर किरीट धारिणी | हाथों में वज्र धारिणी ||

सुशोभित हो तुम प्यारी माँ | सहस्र नेत्रों से भी माँ ||
वृत्रासुर प्राण हारिणी | लोग बुलाएँ तुम्हे ऐन्द्री |
इन्द्र शक्ति रूपिणी माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(१९)

शिवदूती रूप से दैत्यों की | महती सेना संहार करतीं ||
करें महा ध्वनि घोर रूपिणी माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(२०)

विभूषित मुण्डमाला से | मुण्डमर्दिनी चामुण्डे |
बड़े दाँत विकराल मुखी माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(२१)

लक्ष्मी, महाविद्या रूपी | और महाअविद्या भी ||
श्रद्धा पुष्टि स्वधा रूपी | लज्जा, ध्रुवा रूपिणी भी ||
तुम्ही तो हो महारात्री माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(२२)

मेधा, श्रेष्ठा, सरस्वती | तुम्ही भूति, बाभ्रवी ||
ईशा, नियता, काली माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||
सर्वस्वरूपा सर्वेश्वरी | सब शक्ति-युक्ता तुम ही |
सब भयों से रक्षो माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(२४)

कात्यायनी ! माँ त्रिनेत्री | अति प्यारी, अति सुन्दरी ||
रक्षो हमें सब भय से माँ | नमो नमो नारायणी माँ ||

(२५)

ज्वाला के कारण जो | अति विकराल लगे वो |

अत्यंत भयंकर जिससे | असुर बड़े संहार हुए |
वह त्रिशूल हमें रक्षे माँ | नमो नमो भद्रकाली माँ ||

(२६)

हे देवी जो ध्वनि अपनी | से व्याप्त करे जग सारी |
और दैत्य-तेज नष्ट करे | उस निनाद भयंकर से |
वह तुम्हारा घण्टा हमें | पापों से सदा रक्षे |
जैसे अशुभ सब कर्मों से | पुत्रों को माता रक्षे ||
असुरों के रक्त और चर्बी के | कीचड़ से लिप्त हुए ||
तुम्हारे हाथों में है जो | प्रकाश दायक खड्ग वो ||
हमारा वह मंगल करे | बारम्बार नमस्कारें तुम्हे ||

(२८)

प्रसन्न होने पर देवी | रोगों को नष्ट कर देतीं ||
रुष्ट होने पर सभी | चाहतों को निष्फल करतीं ||
तुम्हारी शरण में जो आये | उनपर विपत्ति ना आये ||
क्योंकि तुम्हारी आश्रित जो | दूसरों को शरण देते वो ||

(२९)

तुमने अपने को अम्बिका | बहुत रूपों में प्रकट किया |
सो धर्मद्रोही असुरों का | पूरी तरह संहार हुआ ||
तुम्हारे सिवाय और भला | कौन यह कर सकता था ?

(३०)

विध्याओं में शस्त्रों में | विवेक और वेद के वाक्यों में |
तुम्हारे सिवा और कौन माँ | जिसका वर्णन होता माँ ||
तुम्हे छोड़ माँ और दूसरी | कौन इस जग मैं है शक्ति |

जो विश्व को ममता रूपी | अज्ञान में है भटकाती ||

(३१)

जहाँ राक्षस, सर्प विषवाले | जहाँ शत्रु और लुटेरे |
और जहाँ दावानल हो | या समुद्र बीच फसें हो ||
तुम ही माँ वहाँ सब खड़ी | सदैव ही रक्षा करतीं ||
बनी विश्व की ईश्वरी | और सृजन रक्षा करतीं ||

(३२)

विश्व की आत्मा बनके | धारण की जग अपने में ||
भगवान विश्वनाथ की भी | वन्दनीया हो तुम ही ||
जिनके आपके चरणों में | भक्ति पूर्ण सिर झुके ||
वे इस विश्वके सारे | आश्रय दाता हो जाते ||

(३३)

देवी माँ तुम प्रसन्न हो | हमसे माँ प्रसन्न रहो ||
जैसे असुरों का वध किया | शीघ्र हमें रक्षा किया ||
वैसे माँ तुम सदा हमें | बचाओ शत्रु की भय से |
जग का पाप नष्ट कर दो | उत्पातों से आये जो ||
महामारी जैसे कष्टों को | तुम ही माँ शीघ्र दूर करो ||

(३४)

हम तुम्हारे चरणों में | पड़े हुए हैं, तुम हम से |
प्रसन्न हो प्यारी देवी | विश्व पीड़ा हरने वाली ||
त्रिलोक के निवासियोंकी | तुम पूजनीय परमेश्वरी ||
सभी के लिए आप ही | बनें माँ वरदायिनी ||

(३५)

उस समय बोली देवी | और देवों ने यह सुनी ||

(३६)

“मैं तैयार हूँ वर देने | क्या चाहो तुम मुझ से ?
जग उपकारक तुम जो भी | चाहो वो माँगो अभी !”

(३७)

देवी की यह बात सुनके | देवता ये वचन बोले ||

(३८)

“सर्वेश्वरी ऐसे ही | बाधायें तीनों लोकों की |
शान्त तुम करती रहो | और शत्रु नाश करती रहो ||”

(३९)

देवी बोलीं उत्तर में | “हे देवों अब आप सुनें |

(४०)

वैवस्वत मन्वन्तर के | अट्ठाईस्वें युग में |
शुम्भ निशुम्भ नामके | दो अन्य महादैत्य होंगे ||

(४१)

तब मैं नन्द गोप के | घर यशोदा के गर्भ से ||
जन्म लेके फिर आऊँगी | विन्ध्याचल में जा रहूँगी ||
उन दोनों दुष्ट असुरोंका | मेरे हाथों नाश होगा ||

(४२)

फिर भयंकर रूप से | पृथ्वी पर मैं अवतार ले ||
वध करुँगी दानवों का | वौप्रचित्त नाम जिनका ||

(४३)

जब उन भयंकर दैत्यों का | भक्षण होगा मेरे द्वारा |

तब भाँति अनार फूल के | लाल दाँत मेरे होंगे ||

(४४)

तब स्वर्ग में देव तथा | मृत्यु लोक में लोग सदा ||
मेरी ही स्तुति करेंगे | मुझे "रक्तदन्तिका" कहेंगे ||

(४५)

तदन्तर जब पृथ्वी पे | सौ वर्षों के लिये |
अनावृष्टी हो पड़ेगी | जलरहित भूमि होगी ||
तब सब मुनिगण के | स्तवन-पाठ करने पे |
मैं खुद अयोनिजा ही | उत्पन्न हो जाऊँगी ||

(४६)

तब मैं सौ नेत्रों से | निहारूँगी और लोग मुझे ||
"शताक्षी" कहके पुकारेंगे | और सब मुझे भजेंगे ||

(४७)

उस समय अपने शरीर से | उत्पन्न हुए शाकों से ||
भरण-पोषण संसार का | पूरा मुझ से ही होगा ||
जब तक वर्षा नहीं होगी | तब तक उन शाकों से ही ||
रक्षा होगी प्राणों की | और मेरे ऐसे करते ही ||

(४८)

पृथ्वी पर "शाकाम्बरी" | नाम से मैं विख्यात हुई ||
उस अवतार में मैं ही | महादैत्य वध करूँगी ||

(४९)

"दुर्गम" दैत्य का नाम होगा | "दुर्गा" नाम पड़ेगा मेरा ||
फिर मैं भीम रूप लेके | मुनिगण रक्षा के लिये ||

हिमालय पर रहने वाले | राक्षस भक्षण करके ||
दूंगी मुनियों को मुक्ति | और वे करेंगे भक्ति |
से भरी मेरी ही स्तुति | मुझे "भीमादेवी" बुलायेंगे ||

(५०-५१)

जब अरुण दैत्य महाबाधा | त्रिलोकी में मचायेगा ||

(५२)

त्रिलोकी का हित करने | मैं छ: पैरोंवाले भ्रमर बनके ||
बहु-भ्रमर रूप लूँगी | महादैत्य का वध करूँगी ||

(५३)

तब "भ्रामरी" नाम से ही | चारों ओर मेरी स्तुति होगी ||
ऐसे जब-जब दानवों की | बाधा उपस्थित होगी |
तब-तब अवतार ले मैं ही | शत्रु का नाश करूँगी ||

(५४-५५)

सत्य सनातनी माँ प्यारी | स्वीकारो यह देवी स्तुति |
श्री चरणों पर अर्पित माँ | ये जीवन है देवी माँ ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
"देवी स्तुति" नामक ग्यारहवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १२

अध्याय बारह में माँ हमारे लिए चण्डी पाठ के फल का वर्णन करती हैं |

इस धार्मिक ग्रंथ को सुनने और गहनता से जानने के लिए हमें अपने आप को तैयार करने की आवश्यकता है | माँ की दया का प्रवाह हर समय चलता रहता है, परन्तु उन का कृपा पात्र बनने के लिए हमें अपने आप को तैयार करना पड़ता है | हमारी सभी साधना - पूजा, मंदिर जाना, माँ से प्रार्थना करना, श्रवण करना, मंत्रोचारण करना, अध्याय तथा चण्डी को समझना, हमें माँ का रूप जानने और उन की असीम कृपा का पात्र बनने में सहायक है |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय १२

ध्यान

जो बिजली की चमक जैसी दीप्तिमयी |
सिंह कन्धे पर सवार भयंकर दिखतीं ||
अनेक कन्याएँ खडीं सेवा में ढाल-तलवार लिये |
अपने हाथों में चक्र, गदा, बाण-धनुष लिये |
और ढाल-तलवार, पाश, तर्जनी मुद्रा धारण किये ||
उन अनलात्मिका देवी अर्धचन्द्र मुकुट धारिणी |
उन त्रिनेत्रा दुर्गा देवी का मैं ध्यान करती ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १२

देवी बोलीं अब सुनो ओ देवता |
जो एकचित्त से प्रतिदिन करता || (१)
इन स्तुतियों से स्तवन मैं उसकी |
सारी बाधा निकाल दूर करूंगी || (२)
मधु और कैटभ के वध का |
दैत्य राज महिष के वध का |
और शुम्भ-निशुम्भ के संहार के |
प्रसङ्ग का पाठ जो करेंगे || (३)
अष्टमी, चतुर्दशी एवं नवमी |
को जो एकचित्त मन भक्ति भरी ||
से मेरे इस महात्मय को सुनेंगे |
उनको न कभी पाप लगेंगे ||
और पाप से उत्पन्न जो होते |
आपत्तियाँ न उनको सताते ||
उनके पास न दरिद्रता आयेगी |
प्रियों के वियोग का दुःख न होवेगी || (४,५)
ना रहेगा भय राजा शत्रु का |
ना ही होगा भय अग्नि जल का || (६)

सदा पढ़ना और सुनना चाहिए |
परम कल्याण कारक है जो ये || (७)
महामारी से जनित उपद्रव की |
दैहिक, दैविक, भौतिक संताप की ||
मेरे महात्मय की श्रवण करने से |
ये सब उत्पात शान्त होते || (८)
जिस भी स्थान में प्रतिदिन विधि से |
मेरे महात्मय का पाठ होवे ||
उस स्थान को मैं कभी ना छोड़ूँ |
वहाँ सदा ही मैं निवास करूँ || (९)
बलिदान, पूजा, होम व महोत्सव के |
अवसरों पर मेरे इस चरित्र के |
पूरा-पूरा पाठ और श्रवण करें |
चाहे विधि को जानें या ना जाने || (१०)
मैं उस बलि, पूजा हवन को ही |
बड़ी प्रसन्नता से ग्रहण करूँगी || (११)
शरत्काल में जो पूजा होती |
उसमें जो मेरे चरित्र को भक्ति ||
युक्त सुनेगा उसे मेरी कृपा से |
मिले मुक्ति सब बाधाओं से ||
उसे मेरा प्रसाद धन पुत्र मिले |
तनिक भी संदेह नहीं है इसमें || (१२, १३)
मेरे इस चरित्र, प्रादुर्भाव की |

सुन्दर पुनीत कथाएँ सब ही ||
मेरे प्रराक्रम जो मैंने युद्ध में किये |
निर्भय हो जाते मनुष्य यह सुनके || (१४)
मेरे माहात्मय को जो सुनते |
उनके सब शत्रु नष्ट हो जाते ||
उन्हें कल्याणकी प्राप्ति होती तथा |
उनका कुल आनन्दित ही रहता || (१५)
शान्ति कर्म में या दुस्वप्न देखें |
ग्रह पीड़ा दें तो मेरी कथा सुन लें || (१६)
इससे विघ्न व भयंकर गृह पीड़ा |
शान्त होते व मनुष्य द्वारा दिखा ||
दुस्वप्न भी सुस्वप्न में बदलते |
बालक पीड़ित हों बालग्रहों से || (१७)
तो मिले शान्ति उन्हें इस कथा से |
और अगर झगडा कोई हो आपस में ||
तब इस महात्मयम के सुनने से |
झगडा अन्त होके मित्रता बन जाये || (१८)
सब प्रकार के दुराचार दूर होते |
राक्षस, भूत व पिशाच नष्ट होते || (१९)
मेरे इस पाठ का मनन जो करे |
मेरे बड़े समीप वो आ पहुँचे ||
पशु, पुष्प, अर्घ्य, गंध, दूप-दीप से |
उत्तम वस्तुओं से पूजा करने से || (२०)

ब्राह्मणों को भोजन कराने से |
प्रतिदिन अभिषेक, होम कराने से ||
नाना विधि भोग मुझको चढ़ाने से |
दान देके आदि एक वर्ष के लिए || (२१)
जो की जाती है आराधना मेरी |
उससे मैं जितनी प्रसन्न होती ||
उतनी प्रसन्नता इस चरित्र का |
एक बार सुनने से मुझे मिलता ||
मेरे महात्मय का श्रवण करने से |
आरोग्य मिलता, पाप दूर हो जाते || (२२)
जो मेरे जन्मों का कीर्तन सुने |
वो समस्त भूतों से रक्षा पाये ||
युद्ध में दैत्य संहार चरित जो सुने |
उनका शत्रुओं का भय नाश हो जावे || (२३)
तुमने ब्रह्मर्षियों ने जो स्तुति की |
और ब्रह्माजी ने भी जो स्तुति की || (२४)
उनका सदा मनन करने से प्राणी |
पायें कल्यान्मयी बुद्धि की प्राप्ति ||
किसी वन में या सूने मार्ग में |
कहीं दवानल से घिर जाने पे || (२५)
या चोर घेर लें निर्जन स्थान पे |
या शत्रु चपेट में पड जाने पे |
जंगल में सिंह-व्याघ्र पीछा करने पे |

या जंगली हाथियों के बीच फँसने पे | (२६)
कुपित राजा आदेश से बंधन हो |
या महासागर में भारी तूफ़ान हो | (२७)
कठिन युद्ध में शस्त्रों का निपात हो |
या बड़ी घोर वेदना से पीड़ित हो ||
सभी बाधाओं ने एक साथ घेरा हो |
तो जो स्मरण करता इस चरित्र को || (२८)
मुक्त हो जाता वह मनुष्य संकट से |
हिंसक जन्तु मेरे प्रभाव से नष्ट होते |
लुटेरे और शत्रु भी दूर भाग जाऐं |
उससे जो मेरे चरित्र को याद करे || (२९-३०)
ऋषि बोले सुनो अब हुआ क्या आगे |
उत्सुक होके राजा ने सुनी ध्यान से || (३१)
यों कहकर बड़ी पराक्रम वाली |
भगवती चण्डिका अन्तर्ध्यान हुईं ||
देवता भी सब शत्रु मारे जाने पे |
निर्भय हो के पहले की भाँति वे | (३२-३३)
यज्ञभाग का उपयोग करते हुए |
निज अधिकार का पालन करने लगे ||
संसार विध्वंसी देव शत्रु वो |
महाभयंकर पराक्रमी शुम्भ को || (३४)
और उसके भ्राता महाबली निशुम्भ को |
देवी ने युद्ध में मारा दोनों को ||

फिर शेष दैत्य जो रह गये थे |
पाताल लोक को भाग गये || (३५)
इस प्रकार भगवती अम्बिका देवी |
नित्य होने पर भी पुनः प्रकट होतीं ||
और जगत की वो रक्षा करतीं |
वे ही इस विश्व को मोहित करतीं || (३६)
और वे ही इस जगत को जन्म देतीं |
प्रार्थना से तुष्ट वे ही विज्ञान देतीं ||
प्रसन्न होके माँ ही समृद्धि देतीं |
राजन! सारे ब्रह्माण्ड में वे व्याप्त रहतीं || (३७)
और महाप्रलय के समय महामारी |
का स्वरूप लेतीं वे महाकाली | (३८)
समय समय पर वे महामारी होतीं |
और कभी तो वे अजन्मा होते हुए भी ||
स्वयं ही सृष्टि रूप में प्रकट होतीं |
समयानुसार वे सनातनी देवी ही ||
जगत्जननी बनके सब भूतों की |
सम्पूर्ण रक्षण वे ही देवी करतीं || (३९)
अभ्युदय के दिनों में वही लक्ष्मी |
बनके मानव का कल्यान करतीं ||
अभाव के समय दरिद्रता बनतीं |
विनाश का कारण वही माँ होतीं || (४०)

जो पुष्प, धूप, गन्ध से माँ को पूजें |
और श्रद्धा भरी दिल से स्तुति करें ||
उन्हे माँ धन पुत्र धार्मिक बुद्धि देतीं |
और उत्तम गति उन्हें प्रदान करतीं || (४१)
सरल हिन्दी में माँ ये फल-स्तुति गायें |
गाते गाते माँ तेरे चरणों में आयें ||
सत्य सनातनी माँ इसको स्वीकारो |
शुद्ध भक्ति दे हमें अपना बनालो ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की
कथाके अन्तर्गत देवीमाहत्मय में
“फल स्तुति” नामक बारहवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १३

चण्डी पाठ के प्रारम्भ में, अध्याय एक में ही राजा सुरथ ऋषि से पूछते हैं कि मन को कैसे एकाग्र किया जाए | ऋषि कहते हैं कि यदि तुम मन को प्रवाहित होने दो तो वह अहम से भर जायेगा | यदि प्रार्थना और पूजा द्वारा तुम ध्यान केंद्रित करो तो अहम का नाश हो सकता है | माँ असुरों की शक्ति समाप्त कर देंगी और हमारे अन्दर स्थित देवों को वही शक्ति प्रदान कर देंगी |

इस अध्याय में ऋषि, राजा और वैश्य को प्रोत्साहित करते हैं कि तुम ऐसी पूजा करो जिससे सच्ची भक्ति और ज्ञान पैदा हो | जब माँ तुमसे प्रसन्न होंगी, तो सच्चा आनन्द (कर्म फल) उत्पन्न होगा | स्वर्ग (जीवन का दैवीय ज्ञान) की प्राप्ति, मुक्ति अर्थात पूर्वजों और देवों के ऋण से छुटकारा मिलेगा |

इस अध्याय में हम देखते हैं, कैसे राजा और वैश्य ने साधना की और माँ का दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किया |

आज भी यह माँ का वचन है कि यदि हम ध्यान-मगन होकर चण्डी पाठ करें, तो वे अवश्य आयेंगी | असंख्य साधू, पुरुष और स्त्रियों ने इन वचनों के अनुसार माँ का अनमोल आशीर्वाद पाया है और माँ में ही लीन होके नित्य प्रेम और शान्ति प्राप्त किया है |

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

अध्याय १३

ध्यान

प्रात: कालीन सूर्य जैसे दीप्तमयी |
चार भुजाऐं और त्रिनेत्र धारिणी ||
हाथों में वे देवी पाश व अङ्कुश रखतीं |
वर एवं अभय मुद्रा धारण किये रहतीं ||
उन शिवा देवी का मैं ध्यान करती ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

अध्याय १३

ऋषि बोले आगे, "देखो आप राजा |
इस प्रकार मैंने, आप से है कहा || (१)
देवी के उत्तम, शुभ चरित्रों को |
आप ही के लिये, वर्णन किये वो ||
इस जगत को माँ, धारण करतीं |
प्रभाव ऐसा है उन देवि का ही || (२)
वे ही देवी विद्या, उत्पन्न करतीं |
और वे ही तो मोह को जगातीं ||
प्रभु विष्णु की माया, स्वरूपा वो |
उन के कारण, मोहित आप हो ||
वैश्य व अन्य ज्ञानियों को भी |
मोह में डालें वे ही माँ देवी || (३)
उनके द्वारा ही मोहित होते |
मोहित हुए और मोहित होंगे ||
हे महाराज! तुम जाओ अब ही |
शरण में उन परमेश्वरी की || (४)
आराधना करने पर वे देवी ही |
भुक्ति और मुक्ति प्रदान करतीं || (५)

मार्कण्डेय मुनि ने आगे कहा |
सब के लिये शुद्ध ज्ञान दिया || (६)
जो उत्तम व्रत का पालन करते |
उन महामुनि महर्षि मेधा के |
वचन सुनके राजा सुरथ ने |
साष्टाङ्ग प्रणाम किया उन्हें ||
अत्यंत ममता और राज्य के |
छिन जाने से वे बहुत दुखी थे || (७-८)
इसलिए विरक्त हो के वे |
वैश्य संग तभी चल पड़े ||
तपस्या करके माँ के दर्शन पाने |
चल दिए वे नदी के तट पे || (९)
उन्होंने व वैश्य ने जप किया |
निरन्तर ही देवी सूक्त का ||
वहीं नदी के तट पर देवी |
की मृण्मयी मूर्ति उन्होंने बनाई |
पुष्प, धूप, और हवन आदि से |
पूजा माँ को प्रेम भरे दिल से ||
पहले आहार को धीरे-धीरे |
कम किया फिर निराहार होके |
देवी में मन पूर्ण लगाके |
माँ के चरणों में लीन होके | (१०-११)

उन दोनों ने अपने शरीर के |
रक्त से प्रोक्षित बलि देके |
तीन वर्षों तक करते वे रहे |
माँ की अराधना करते रहे || (१२)
इस पर माँ, जगत धारिणी |
प्रसन्न हुईं, चण्डिका देवी || (१३)
प्रत्यक्ष दर्शन, दिया श्री माँ ने |
प्रेम सहित ये, वचन बोलीं वे || (१४)
“हे राजा! तथा, वैश्य अपने |
कुल को जो, आनन्दित करते |
तुम्हारी जो, अभिलाषा हो |
उसे तुम दोनों, मुझसे ही कहो |
मैं देने को अभी प्रस्तुत हूँ |
तुम से मैं बहुत प्रसन्न हूँ ||” (१५)
मार्कण्डेय बोले तब राजा ने |
माँगा राज्य दूसरे जन्म में | (१६)
जो कभी भी ना नष्ट होवे |
और राज्य इस जन्म के |
को पुन: प्राप्त करने की |
भी वर राजा ने माँगी || (१७)
वैश्य तो बड़े, बुद्धिमान थे |
संसार से वे, विरक्त ही थे |

ममता और अहमता रूप के |
आशक्ति को, नाश करने वाले |
परम ज्ञान को वैश्य ने माँगा |
तो देवी ने दोनों से कहा || (१८,१९)
"राजन! तुम थोड़े ही दिनमें |
शत्रुओं को मारके अपने |
राज्य को प्राप्त कर लोगे |
और शान्ति से राज्य करोगे || (२०-२१)
फिर मृत्यु के पश्चात तुम ही |
भगवान सूर्य के अंश से ही |
जन्म लोगे इस पृथ्वी पे |
सावर्णि मनु के नाम से || (२२-२३)
वैश्यवर! तुम जिस वर को |
प्राप्त करने के इच्छुक हो |
मोक्ष प्राप्ति का ज्ञान ही तो |
देतीं हूँ मैं अभी तुमको ||" (२४-२५)
मार्कण्डेय जी, ने फिर कहा |
इस प्रकार दोनों को दिया | (२६)
माँ ने मनचाहा वरदान |
और सुना उनसे स्तुति-गान |
सुनके भक्ति भरी वाणी उनकी |
अन्तर्धान फिर माँ हो गयीं ||

इस प्रकार देवी से वर पाके |
क्षत्रियों में श्रेष्ठ जो थे |
सुरथ राजा वे ही सूर्य से |
जन्म ले के मनु बनेंगे |
वे ही सावर्णि नाम मनु होंगे |
सुरथ ही सावर्णि मनु होंगे || (२७-२८)
सुरथ व वैश्य के वर की कथा |
माँ प्यारी हमने तुम्हें सुनाया ||
स्वीकारो इसे सत्य सनातनी |
भक्ति दो हमें प्रेम स्वरूपिणी ||

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहत्मय में "सुरथ और वैश्य को वरदान" नामक तेरहवाँ अध्याय पूरा हुआ ||

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नम:

ऋगवेदोक्त देवीसूक्तम्

अम्ब्रिनी मुनि की कन्या वाक ऋषिनी ने जगत माता के साथ अपनी लीनता का अनुभव किया, तो उन्होंने देवी सूक्तम् का उच्चारण किया, जो ऋग वेद का ही अंश है | इस सुन्दर सूक्तम् में उन्होंने संसार की सारी रचना के साथ एकता का अनुभव किया | इस सूक्तम में लिखा है कि देवी माँ ही हैं जो सभी शक्तियों की दात्री हैं और वे उसको सर्वज्ञ ऋषि बनाती हैं जिससे वह स्नेह करती हैं | वह हमें साधना की प्रेरणा देती हैं | उन्ही से प्रेरित होकर हम हर सम्बन्ध में प्यार और मधुरता ढूंढ़ते हैं |

चण्डी पाठ के तेरह अध्याय हमें सिखाते हैं कि कैसे हम माँ को समर्पण करें और जीवन में उच्चता को प्राप्त करें |

ॐ मैं सचिदानान्द्मयी सर्वात्मा देवी
रूद्र, वसु, आदित्य, विश्व देवों के संग ही
विचरती हूँ |
मैं मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि को,
और दोनों अश्विनी कुमारों को
संभालती हूँ || (१)

मैं ही शत्रुओं के नाशक सोम को,
त्वष्टा, पूषा तथा भगा को
धारण करती हूँ ||
जो देवों को हविष्य की प्राप्ति कराता,
जो उन्हें सोमरस के द्वारा तृप्ति कराता,
उसको मैं धन और फल यज्ञ का
प्रदान करती हूँ || (२)
मैं ही एकमात्र अधीश्वरी ब्रह्माण्ड की,
मैं ब्रह्म साक्षात्कार-रूपा ज्ञान-रूपा धन दात्री,
पूजनीय देवताओं में मैं ही
प्रधान हूँ |
मैं स्थित प्रपञ्चरूप से अनेक भावों में,
मेरा प्रवेश सम्पूर्ण भूतों में अनेक स्थानों में,
देवता जहाँ-कहीं जो-कुछ भी करते, मेरे लिये
करते हैं || (३)
जीव जो भक्षण करे, दर्शन करे, प्राण धारण करे,
मेरी ही सहायता से वह समर्थ हर कर्म करने में
होता है |
जो मुझे सब कर्मों में, नहीं देखते, नहीं जानते,
वे संसार में दीन दशा को ही प्राप्त होते
जाते हैं |

हे सौम्य सुनो! श्रद्धा से प्राप्त होता जो,
ब्रह्म तत्व का उपदेश मैं तुमको
देती हूँ ॥ (४)
मैं स्वयं ही, देवताओं और मनुष्यों द्वारा
परिसेवित, वर्णन इस दुर्लभ तत्व का
करती हूँ ।
मैं जिसको चाहती हूँ, मैं उसे उच्च पद देती,
ब्रह्मा बनाती, ऋषि बनाती, उसे उत्तम मेधाशक्ति
देती हूँ ॥ (५)
मैं ही ब्रह्मज्ञान विरोधियों का हनन करने,
रूद्र के धनुष को प्रणव मन्त्र से
चढ़ाती हूँ ।
मैं ही ऐसे सब जीवों के लिए युद्ध करती,
अन्तर्यामी व्याप्त स्वर्ग-मृत्यु लोकों में मैं ही
रहती हूँ ॥ (६)
मैं ही इस जीव-जगत के परमपिता की जननी,
अन्तरीय समुद्र के जल में मेरी रचनात्मक शक्ति,
पूर्ण भुवन में व्याप्त, अपनी श्रेष्ठता से स्वर्ग की चोटी
छूती हूँ ॥ (७)
मैं समस्त विश्व की रचना आरम्भ करती,
तब स्वयं ही वायु की भांति मैं चलती,
स्वर्ग-मृत्यु सब से परे, अतुलनीय मेरी
महिमा है ॥ (८)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

क्षमा प्रार्थना

परमेश्वरी ! द्वारा मेरे, दिन-रात अपराध होते |
दास अपना समझके, माँ कृपया क्षमा कर दें || (१)

भगवती आवाहन को और विसर्जन करने को |
ना जानूँ व पूजा विधि से भी, हूँ मैं अज्ञान देवी || (२)

फिर भी प्यारी सुरेश्वरी, मन्त्र-क्रिया-भक्ति हीन भी |
यह पूजा जो हमने करी, वो पूर्ण हो कृपा से आपकी ||
(३)

सैंकडों अपराध करके भी, जो माँ के शरण आते ही |
'जगदम्बा' कहके पुकारते, वे ऎसी जाती प्राप्त करते |
जो ब्रह्मा व देवगण भी, प्राप्त न कर पाते ही ||
(४)

जगदम्बिके मैं हूँ अपराधी, किन्तु आया हूँ शरण तुम्हारी |
मुझे दया का पात्र समझो, जो चाहो माँ वो ही करो ||
(५)

अज्ञान से और भूल से, या बुद्धि भ्रांत होने से |
मैंने जो भी गलत किया हो, वह सब क्षमा कर दो |
प्रसन्न हो माँ प्रसन्न रहो, परमेश्वरी माँ प्रसन्न हो ||
(६)

सच्चिदानन्द रूपा परमेश्वरी, जगन्माता कामेश्वरी |
प्रेम पूर्वक स्वीकारो, मेरी पूजा व प्रसन्न रहो ||

(७)

जो सबसे गोपनीय हो, उसकी रक्षा तुम करती हो |
मेरी प्रार्थना और जप को, माँ कृपया तुम ग्रहण करो ||
मुझे तुम्हारी कृपा से देवी, सिद्धि मिले सुरेश्वरी ||

(८)

ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः

सूची एक

देव गण	**शान्ति और ईश्वरत्व की ताकत**
सूर्य	ज्ञान की ज्योति
इन्द्र	पवित्रता के नायक
अग्नि	ध्यान की ज्योति
अनिल (वायु)	मुक्ति
इन्दु (चन्द्र)	भक्ति
यम	नियन्त्रण की शक्ति
वरुण	समानता के मालिक
वासु	संपत्ति पाने वाले
कुबेर	खज़ाने का रक्षक
प्रजापति	अस्तित्व के मालिक
पावक (अग्नि)	ध्यान की स्पष्टता
असुर	**द्वैतवाद की सेना**
महिषासुर	प्रचुर-अहंकार
चिक्षुर	भ्रम
चामर	चपलता
उदग्र	घमण्ड
महाहनु	महा छली
असिलोमा	दृढता-हीन
बाष्कल	पुरानी यादें
परिवारीत	इधर-उधर अस्थिर
बिडाल	पाखण्ड

सूची दो

कराल	अविश्वास
ताम्र	फ़िक्र
अन्धकासुर	अंधापन
उग्रास्य	रोष
उग्रवीर्य	मदहोशी
दुर्धर	प्रबल लालच
दुर्मुख	अशुद्ध मुख